मई, 2026 , वर्ष : 47 अंक : 5

www.indiatibet.net

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

मई, 2026 , वर्ष : 47 अंक : 5

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित
तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथों में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

17वें कशाग, सेंट्रल तिब्बतन एडमिनिस्ट्रेशन के सिक्योंग के शपथ ग्रहण समारोह में संबोधन

समाचार -

०१. परम पावन दलाई लामा ने दोखाम चुशी गंगद्रुक और हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया 2
०२. सिक्योंग पेम्पा शेरिंग ने पहले युवा सशक्तिकरण अनुभाग के हितधारक कॉन्फ्रेंस में युवाओं की रणनीतिक भागीदारी का आह्वान किया 3
०३. सिक्योंग के नेतृत्व में सीटीए का प्रतिनिधिमंडल दिल्ली में अमेरिका के 'फ्रीडम २५०' समारोह में शामिल हुआ 5
०४. सीटीए की १७वीं कशाग के सिक्योंग के शपथ ग्रहण समारोह में उद्घाटन भाषण 5
०५. तिब्बत म्यूजियम का कोलकाता में शैक्षणिक भ्रमण संपन्न 7
०६. ब्रसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा ११वें पंचेन लामा के ३७वें जन्मदिन और उनके जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी पर मुहिम 8
०७. तिब्बत संग्रहालय ने ११वें पंचेन लामा के जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी पर 'इंटरनेशनल म्यूजियम डे' मनाया 8
०८. नई दिल्ली में डॉ. निर्मला देशपांडे की याद में एबीआरएस द्वारा आयोजित वैश्विक शांति संगोष्ठी में आईटीसीओ शामिल 9
०९. भारत-तिब्बत सहयोग मंच का हिमालयी मुद्दे पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक और सेमिनार संपन्न 9
१०. देहरादून के तिब्बती बस्ती अधिकारी ने बुद्ध पूर्णिमा (वेसाक) महोत्सव में भाग लिया 11
११. पोंटा चोलसुम क्षेत्रीय घोटोन आयोजन समिति ने भारतीय स्कूलों में ३-दिन का एसईई लर्निंग और चार मुख्य प्रतिबद्धताओं' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया 11
१२. कुल्लू पालराब्लिंग ने परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के सम्मान में धर्मार्थ कार्यक्रम आयोजित किए 12
१३. टोक्यो यूनिवर्सिटी के कोमाबा परिसर में पुनर्जन्म, सुरक्षा और लोकतंत्र पर संगोष्ठी 12
१५. चिली के सांसद लुइस माला वालेंजुएला और अल साल्वाडोर के जोस फ्रांसिस्को लिरा अल्वाराडो ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 14
१६. यूरोपीय संसद ने चीन के 'एथनिक यूनिटी लॉ (नस्लीय एकीकरण कानून)' की कड़ी निंदा की, इसे रद्द करने और प्रतिबंधित करने की मांग की 14
१७. बयान: तिब्बत पर कड़ी नजर: चीन कैसे सूचना प्रवाह को नियंत्रित करता है 15
१८. तिब्बत में आत्मदाह करने वालों की याद में 16

समाचार -

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की [illegible]

coordinator@indiatibet.net

अपनी बात

तिब्बती समाज में चुनावी जागरुकता अभियान से भारी उत्साह

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

परमपावन दलाईलामा की आध्यात्मिक उपस्थिति में निर्वासित तिब्बत सरकार के राज्याध्यक्ष–षासनाध्यक्ष अर्थात् सिक्योंग पद पर माननीय पेंपा त्सेरिंग को लगातार दूसरे कार्यकाल के लिये गत 27 मई, 2026 को शपथ दिलाई गई। इससे तिब्बती समुदाय के साथ ही समस्त तिब्बत समर्थकों में भारी उत्साह है। तिब्बत के सर्वोच्च न्यायिक आयुक्त द्वारा शपथ दिलाने के अवसर पर विभिन्न देषों के सांसद, जनप्रतिनिधि, तिब्बत समर्थक संगठनों के प्रतिनिधि तथा षिक्षाविद् एवं तिब्बत से संबंधित विषेषज्ञ उपस्थित थे। इस अवसर पर पुनर्निवाचित सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग को विभिन्न देषों के जनप्रतिनिधियों, सरकारी प्रतिनिधियों, विशेषज्ञों, विचारकों एवं जनमत निर्माताओं द्वारा हार्दिक शुभकामनायें दी गईं। यह वास्तव में तिब्बती संघर्ष के प्रति लगातार बढ़ रहे अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं समर्थन का ठोस प्रमाण है।

तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा तिब्बत के राज्याध्यक्ष एवं शासनाध्यक्ष होते थे। वर्तमान 14वें दलाईलामा ने तिब्बत में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिये अपने आप को सिर्फ धार्मिक कार्यों तक सीमित रखने का निष्चय किया। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं आषीर्वाद से तिब्बती लोगों ने वयस्क मताधिकार का प्रयोग कर अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन शुरू किया। उनके द्वारा सफलतापूर्वक लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अपनाने के बाद सन् 2011 में अपने संपूर्ण राजनीतिक अधिकार दलाईलामा ने तिब्बती जनता द्वारा निर्वाचित तथा हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार को सौंप दिये। अपने अधिकार को जनप्रतिनिधियों को सौंपकर उन्होंने बता दिया है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था ही सर्वोत्तम व्यवस्था है।

चुनावी प्रक्रिया के प्रथम चरण में ही पेंपा त्सेरिंग सिक्योंग पुनर्निर्वाचित घोषित हो चुके थे। इसके बाद द्वितीय चरण में तिब्बती चुनाव आयोग द्वारा 18वीं तिब्बती संसद के कुल 45 सदस्यों हेतु मतदान कराये गये। इसके अनुसार तिब्बत के प्रत्येक पारंपरिक प्रांत उत्सांग, धोतो और धोमे से 10–10 सदस्य चुने गये। बौद्ध धर्म के प्रत्येक संप्रदाय निंगमा, कर्ग्यू, साक्य, गेलुग और बॉन से 2–2 सदस्य चुने गये। इसी के साथ उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका से 2, यूरोप और अफ्रीका से 2 तथा आस्ट्रेलिया एवं एषिया (भारत, नेपाल और भूटान को छोड़कर) से 1 सांसद का निर्वाचन किया गया।

इसी मई माह में निर्वासित तिब्बत सरकार के विपरीत चीन सरकार लोकतांत्रिक आदर्षों को कुचलने में लगी है। चीनी जातीय एकता कानून के क्रियान्वयन से सभी अल्पसंख्यकों, तिब्बती सहित, के धर्म, संस्कृति, भाषा, अधिकार और पहचान प्रतिबंधित हो जायेंगे। यह चीनी कानून चीनी संविधान के ही प्रतिकूल है क्योंकि चीनी संविधान में अल्पसंख्यकों के संरक्षण का प्रावधान है। यूरोपीय संघ ने चीनी जातीय एकता कानून की कड़ी निंदा की है तथा इसे समाप्त करने की अपील की है। साथ ही इसने दलाईलामा के पुनर्जन्म तथा नये दलाईलामा के चयन की प्रक्रिया में चीनी हस्तक्षेप का विरोध किया है।

तिब्बत की गौरवषाली भाषा, संस्कृति इतिहास एवं धार्मिक योगदान और पहचान की अविस्मरणीय झलक इसी मई, 2026 में धर्मषाला (हिमाचल प्रदेष) में देखने की मिली। तिब्बती सांस्कृतिक उत्सव में शामिल होकर भारतीय तो तिब्बतियों से भी अधिक प्रसन्न थे। इसमें तिब्बती पहचान के साथ तिब्बत के इतिहास की भी झलक थी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मानवीय मूल्यों, प्राकृतिक सम्पत्ति एवं पर्यावरण के संरक्षण के महत्व को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया था। चीन की दमनकारी तिब्बत नीति तथा तथाकथित चीनी जातीय एकता कानून से तिब्बत गंभीर संकट में फँसता जा रहा है। इस समय यथाशीघ्र उचित कदम उठाने की जरूरत है।

तिब्बती पहचान के संरक्षण–संवर्धन में दलाईलामा का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने तिब्बती संघर्ष को अंतरराष्ट्रीय पहचान दी है। उन्होंने अहिंसा, करुणा आदि मानवीय मूल्यों एवं सभी मजहब (रिलिजन, पंथ, संप्रदाय, मत) के बीच परस्पर सम्मान को बढ़ावा दिया है। वे भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा को पुनर्जीवित करने में लगे हैं। उनके इसी योगदान के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उनके जन्मदिवस 6 जुलाई, 2025 से 6 जुलाई, 2026 की अवधि को अंतरराष्ट्रीय करुणा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा द्वारा 18 से 21 मई तक दलाईलामा के त्सुगलाखांग मंदिर में दीर्घायु प्रार्थना (तेनसुग) एवं अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गेशे लामा चोसफेल जोत्पा द्वारा दलाईलामा को विश्व शांति हेतु ''करुणा एवं मैत्री अलंकरण'' प्रदान किया गया। उन्हें एक प्रशंसा–पत्र, जो वास्तव में कृतज्ञता–पत्र है, सौंपा गया। तेनसुग समिति के अध्यक्ष लामा चोसफेल जोत्पा के साथ अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तरप्रदेश सरकार, लखनऊ द्वारा अंतरराष्ट्रीय शांति के लिये दलाईलामा को ''करुणा एवं सद्भाव सम्मान'' समर्पित किया गया। शोध संस्थान के निदेशक डॉ. राकेश सिंह तथा शोध अधिकारी अरुणेश कुमार मिश्र ''वैद्य जी'' ने संस्थान द्वारा प्रकाशित धम्मपद की प्रति तथा अंगवस्त्र उन्हें अर्पित किये। दलाईलामा ने इन्हें हँसते हुए स्वीकार किया। साथ ही उन्होंने डॉ. राकेश सिंह तथा वैद्य अरुणेश कुमार मिश्र को आशीर्वादस्वरूप खतक एवं रक्षासूत्र प्रदान किये।

दलाईलामा को जब कृतज्ञतापूर्ण तथा सम्मानस्वरूप स्मृतिचिन्ह, प्रशंसा पत्र, धम्मपद तथा अंगवस्त्र प्रदान किये जा रहे थे उस समय कार्यक्रम स्थल हजारों देशी–विदेशी श्रद्धालुओं, विचारकों तथा मीडियाकर्मियों से खचाखच भरा था। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण विभिन्न भाषाओं में हो रहा था इसलिये सभी आभार प्रकट करते हुए तालियाँ बजा रहे थे। विनम्र एवं वयोवृद्ध दलाईलामा स्वस्थ एवं दीर्घजीवी हों यह सबकी हार्दिक भावना थी। कृतज्ञ ''तिब्बत देश'' परिवार भी भगवान् से यही प्रार्थना करता है कि हमें भविष्य में भी दलाईलामा से मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे।

◆ ०१. परम पावन दलाई लामा ने दोखाम चुशी गंगद्रुक और हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया

२१ मई, २०२६

थेकचेन चोलिंग, धर्मशाला। आज २१ मई की सुबह, जब परम पावन दलाई लामा मुख्य तिब्बती मंदिर- सुगलाखंग- जाने के लिए अपने निवास से निकले, तो वहां पर हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ के अध्यक्ष गेशे लोबसांग न्येनदाक, गोमांग और ग्युतो मठों के पूर्व महंथों और दोखाम चुशी गंगद्रुक के अध्यक्ष ने उनका स्वागत किया। दोखाम चुशी गंगद्रुक नाम का एक तिब्बती स्वयंसेवी प्रतिरोध बल है, जिसका अर्थ- चार नदियां, छह पर्वतमालाएं- होता है। इस बल का गठन तिब्बत की रक्षा के लिए पहले प्रतिरोध बल के तौर पर हुआ था। इस बल के साथ ही हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ की ओर से उनके अध्यक्ष परम पावन की दीर्घायु के लिए प्रार्थनाएं करने आए थे।

परम पावन जब मंदिर के प्रांगण से होकर गुजरे, तो दोनों समूहों के संरक्षकों और अन्य शुभचिंतकों की ओर देखकर स्नेहपूर्ण मुस्कान बिखेरी। ये लोग परम पावन का स्वागत करने के लिए प्रांगण के दोनों ओर कतारबद्ध खड़े थे।

मंदिर के भीतर परम पावन का पट्टासन गेंदे के फूलों की मालाओं से भव्य रूप से सजाया गया था। उनके सामने रखी मेज पर सफेद चंपा के फूलों की लड़ियां सजाई गई थीं। उनके ठीक सामने इस अनुष्ठान की अध्यक्षता कर रहे कुंदेलिंग रिनपोछे विराजमान थे। उनकी दाईं ओर नामग्याल मठ के महंथ, गंडेन शारत्से के महंथ, ग्युतो के पूर्व महंथ खेनसुर लोबसांग खेद्रुप, गोमांग के पूर्व महंथ खेनसुर लोबसांग ग्यालत्सेन और अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के महासचिव शारत्से खेनसुर जांगचूब चोडेन बैठे थे। रिनपोछे की बाईं ओर गंडेन जांगत्से के महंथ जिग्मे लामसांग (भूटान से) और गंडेन शारत्से के महंथ जांगचूब सांग्ये बैठे थे। इनके अतिरिक्त, न्यिंगमा, साक्या, काग्यू और बोन परंपराओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

समारोह की शुरुआत 'क्लाउड्स ऑफ एम्ब्रोसियल ब्लेसिंग्स (अमृतमयी आशीर्वाद की वर्षा)' के पाठ के साथ हुई। यह ट्रुलसिक रिनपोछे द्वारा रचित प्रार्थना है, जिसमें परम पावन दलाई लामा के पिछले जन्मों का स्मरण किया गया है। इसमें तिब्बत के धर्म-राजाओं, ड्रोम टोन पेमा जुंगने, ड्रेपुंग मठ के संस्थापक जामयांग चोजे और भारत व तिब्बत के कई अन्य महानुभावों का स्मरण किया गया है। इसमें परम पावन के जन्म का उल्लेख करने वाला श्लोक इस प्रकार है :-

हे अद्भुत रूप श्रीदेवी (पाल्डेन ल्हामो) की भविष्यवाणी के अनुरूप

से तक्तसेर में जन्मे,

जो स्थान गुरु मंजुनाथ (जे सोंगखापा) के जन्मस्थान के निकट है,

धोमे (आमदो) में एक ऐसे परिवार में, जिसका मूल केंद्र (तिब्बत में था) हम आपकी प्रार्थना करते हैं।

इसके बाद मुख्य समारोह शुरू हुआ, जो 'महान पांचवें दलाई लामा' रचित 'इच्छा-पूर्ति चक्र वाली श्वेत तारा के दीर्घायु समारोह' पर आधारित था। इसमें श्वेत अक्षर 'ताम' से प्रकट होती हुई श्वेत तारा का आह्वान किया गया- 'उनका शरीर शरद ऋतु के चंद्रमा के समान श्वेत है। उनके एक मुख और तीन नेत्र हैं, दो भुजाएं हैं और उनकी वय षोडशियों जैसी है। उनका दाहिना हाथ श्रेष्ठ सिद्धियां प्रदान करने की मुद्रा में है। अपने बाएं हाथ की अनामिका और अंगूठे के बीच वह अपने हृदय के पास एक श्वेत उत्पल पुष्प की डंडी धारण की हुई हैं। वे वज्र मुद्रा में पैर मोड़कर बैठी हुई हैं। उनके लिए प्रार्थना इस प्रकार की गई:

हे देवी,आप युगों- युगों से धन्य हैं,

आपने प्रेमपूर्ण स्नेह के कारण करुणा की साधना की हुई है।

आपकी आकांक्षाएं विशाल हैं, आपके दर्शन पूर्ण हैं,

और अब समय आ गया है, जब आप भव्य प्राणियों के कल्याण के अपने संकल्प को पूर्ण करें।

उन्हें भेंटों की एक लंबी शृंखला अर्पित की गई, जिसकी शुरुआत पीने के जल, पैर धोने के जल, मुख धोने के जल, पवित्र जल (बाधाकारी शक्तियों को दूर करने हेतु छिड़का जाने वाला जल), पुष्प, धूप, दीपक, सुगंध, भोजन, संगीत आदि से हुई। वस्त्रों, आभूषणों, सात बहुमूल्य निधियों, सात गौण बहुमूल्य निधियों, आठ मांगलिक प्रतीकों, तथा पांच इंद्रिय विषयों- दृश्य रूप, संगीत, सुगंध, स्वाद और स्पर्श योग्य वस्तु की भेंटें भी अर्पित की गईं। इसके अतिरिक्त, एक छत्र, एक विजय-पताका, एक मांगलिक ध्वज, वस्त्र और संगीत भी उन्हें समर्पित किए गए।

इसके बाद देवी तारा की स्तुति की गई:

हे मां तारे, आप प्राणियों को संसार के बंधनों से मुक्त करती हैं।

तुत्तारे के द्वारा आप प्राणियों को आठ प्रकार के भयों से मुक्त करती हैं।

तारे के द्वारा आप प्राणियों को मृत्यु से मुक्त करती हैं।

हे देवी तारा, हम आपको प्रणाम करते हैं।

इसके बाद लामा के हृदय में एक श्वेत चक्र का वर्णन किया गया। यह चंद्रमा के समान था, जिसमें आठ अरे और पांच परिधियां हैं। इसके केंद्र में श्वेत बीज मंत्र 'ताम' स्थित है, जो परम पावन के नाम मंत्र से घिरा हुआ है- ॐ आह गुरु वज्रधर भट्टारक मंजुश्री वागीन्द्र सुमति ज्ञान शासन धर समुद्र श्री भद्र सिद्धि आयुः पुण्य ज्ञान पुष्टिं कुरु। लामा के हृदय की कल्पना तारा के रूप में की गई ह।

इस प्रथम छंद के क्रम का अनुसरण करते हुए आगे कई छंदों के माध्यम से इस साधना परंपरा के गुरुओं का आह्वान किया गया:-

हे धन्य, हे बुद्ध, हे ऋषियों के नाथ,
हम आपको इस स्थान पर आमंत्रित करते हैं।
इस परम पावन धाम में पधारकर,
कृपा कर आप हमारे
यशस्वी एवं पवित्र लामा के जीवन को सौ कल्पों तक दीर्घायु प्रदान करें।
कृपया उन्हें अमर जीवन की आध्यात्मिक सिद्धि प्रदान करें।
ॐ तारे तुत्तारे तुरे सद्गुरोः आयुः पुण्य ज्ञान पुष्टिं कुरु स्वाहा।
लामा के मस्तक को सुशोभित कर रहे अमिताभ अमित आयु (अमित

आयुस) रूप हो गए; वे असीम दीर्घायु और आदिम प्रज्ञा के रक्षक हैं और अपने हाथों में अमरत्व के अमृत से भरा एक स्वर्ण कलश धारण किए हुए हैं। अमृत की एक धारा ऊपर उठी, कलश से छलक पड़ी और लामा के मस्तक के शीर्ष पर स्थित छिद्र के माध्यम से उनके शरीर में प्रविष्ट हो गई। उनका संपूर्ण शरीर अमृत से भर गया, जिसने अशुद्ध दृष्टि से प्रतीत होने वाले रोगों, नकारात्मक प्रभावों, हानिकारक कर्मों, आवरणों और अकाल मृत्यु, जैसे समस्त संकटों का शुद्धिकरण कर दिया। इस प्रकार, लामा ने अमरत्व की आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त कर ली।

अनुष्ठान करने वाले लामाओं ने लगभग ५,००० अनुयायियों से 'ओम तारे तुत्तारे तुरे सतगुरु रायुर पुण्य ज्ञान पुष्टिं कुरु स्वाहा' मंत्र का जितनी बार संभव हो सका, उतनी बार जाप करवाया।

कुंडेलिंग रिनपोछे ने दोखाम चुशी गंगद्रुक के पूर्व अध्यक्ष और हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ के अध्यक्ष के साथ परम पावन को एक मंडल अर्पित किया और उनसे दीर्घायु होने का अनुरोध किया। इसके साथ बुद्ध के मन, वचन और कर्म के प्रतीक रूप जीवन-अमृत से भरा एक कलश, पांच बुद्ध परिवारों के प्रतीक, दीर्घायु प्रदान करने वाली मदिरा और गोलियां, सात शाही रत्न-चिह्न, आठ शुभ प्रतीक और आठ शुभ पदार्थ भी अर्पित किए गए।

परंपरा के अनुसार, परम पावन की दीर्घायु के लिए उनके दो गुरुओं द्वारा रचित प्रार्थना- 'अमरत्व का गीत' गाया गया। इसमें निम्नलिखित टेक भी शामिल हैं:

हे प्रभु, हम पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ आपको प्रार्थनाएं अर्पित करते हैं:

कि हिम-भूमि (तिब्बत) के रक्षक, तेनजिन ग्यात्सो, सौ कल्पों तक जीवित रहें।

उन पर अपनी कृपा-दृष्टि बरसाएं,

ताकि उनकी सभी मनोकामनाएं बिना किसी बाधा के पूर्ण हो सकें।

आज प्रार्थनाएं अर्पित करने वाले दोनों समूहों के सदस्य प्रबुद्ध संतों के चित्र, धर्मग्रंथ और अन्य पवित्र वस्तुएं अपने हाथों में लिए हुए मंदिर से होकर गुजरे। उनके प्रतिनिधियों ने परम पावन का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके पट्टासन के निकट पहुंचकर उन्हें नमन किया।

इस अवसर पर परम पावन से एक अत्यंत भावपूर्ण अनुरोध किया गया- 'हे परम पावन, हम दोखाम चुशी गंगद्रुक के सदस्य आपका अभिनंदन करना चाहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि तिब्बत की धरती पर एक बार फिर शीघ्र ही सूर्य का प्रकाश फैले और हम तिब्बती लोग वहां पुनः एकत्रित हो सकें। पिछले तीन दिनों के दौरान १३५ भिक्षु और भिक्षुणियों ने आपकी दीर्घायु के लिए विशेष अनुष्ठान संपन्न किए हैं।'

दोखाम चुशी गंगद्रुक के प्रतिनिधियों द्वारा परम पावन के प्रति कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने हेतु एक अलंकृत स्मृति-चिह्न उन्हें भेंट किया गया और साथ ही उस स्मृति-चिह्न की विशेषताओं के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया गया।

हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ के लामाओं ने एक चांदी का शंख और उसके साथ एक प्रशस्ति-पत्र भेंट किया, जिसे परम पावन ने पढ़ा। उन्होंने कहा- 'परम पावन के ९०वें जन्मदिन के समारोहों और 'करुणा वर्ष' के अवसर पर हम सभी प्राणियों, विशेष रूप से तिब्बत के लोगों के कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं। यह चांदी का शंख हम आपको कृतज्ञता स्वरूप भेंट करते हैं।'

हिमालयी बौद्ध सांस्कृतिक संघ के दो प्रतिनिधियों ने परम पावन को एक सजा हुआ बोधि-पत्र भेंट किया और उन्हें बताया कि उन्होंने इस पर तिब्बत की संस्कृति, साहित्य और प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने के उनके कार्यों के प्रति सम्मान के शब्द अंकित किए हैं- 'तिब्बत के प्राणियों और शिक्षाओं के रक्षक, आपकी सभी शुभ इच्छाएं पूर्ण हों।'

चुशी गंगद्रुक के सदस्यों ने छठे दलाई लामा द्वारा रचित गीत गाए, जिनमें उनके उत्तराधिकारी के बारे में प्रसिद्ध भविष्यवाणी भी शामिल थी- 'हे श्वेत सारस! मुझे अपने पंख उधार दो, मैं दूर तक नहीं उड़ूंगा। लिथांग से मैं लौट आऊंगा।'

परम पावन को उनके दीर्घायु रहने की सहमति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक 'कृतज्ञता मंडल' भेंट किया गया। इसके बाद दीर्घायु के देवता 'अमित आयुस' की प्रार्थना की गई और बिना किसी सांप्रदायिक भेदभाव के बुद्ध की शिक्षाओं के प्रसार की प्रार्थना 'ऋषि का सत्य का सामंजस्यपूर्ण गीत' की गईं, जिसमें ये पंक्तियां शामिल हैं:-

जो गुरु इन शिक्षाओं को धारण करते हैं, उनका जीवन सुरक्षित और सामंजस्यपूर्ण हो!

संघ (भिक्षु समुदाय) अपने अध्ययन, ध्यान और कार्यों के माध्यम से इन शिक्षाओं को संरक्षित रखे!

यह संसार उन श्रद्धालु व्यक्तियों से भर जाए जो इन शिक्षाओं का पालन करने के लिए तत्पर हैं!

और बुद्ध की ये सांप्रदायिक-भेद-रहित शिक्षाएं लंबे समय तक फलती-फूलती रहें!

समारोह का समापन 'सत्य के शब्द' नामक प्रार्थना के साथ हुआ।

जब परम पावन मंदिर से बाहर निकल रहे थे, तो उन्होंने दो युवा 'तुलकुओं (पुनर्जन्म ले चुके लामाओं) को अपने पास बुलाया और उन्हें प्रोत्साहन के शब्द कहे। इसी प्रकार, जब वे लिफ्ट की ओर बढ़ रहे थे, तो उन्होंने भीड़ में मौजूद बुजुर्गों और युवाओं पर विशेष ध्यान दिया, और इस पूरे समय रास्ते में कतार बनाकर खड़े हर व्यक्ति के लिए उनके चेहरे पर एक मुस्कान बनी रही।

◆ ०२. सिक्योंग पेम्पा शेरिंग ने पहले युवा सशक्तिकरण अनुभाग के हितधारक कॉन्फ्रेंस में युवाओं की रणनीतिक भागीदारी का आह्वान किया

२२ मई, २०२६

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेम्पा शेरिंग ने २१ मई को धर्मशाला स्थित 'एडमिनिस्ट्रेशन ट्रेनिंग एंड वेलफेयर सोसाइटी सेंटर' में सीटीए के गृह विभाग के अंतर्गत 'युवा सशक्तिकरण अनुभाग (वाईईएस+) द्वारा आयोजित दो-दिवसीय वाईईएस+ हितधारक कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन किया। इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य तिब्बती

युवा कार्यबल और आजीविका पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में साझा समझ विकसित करने के साथ ही प्रमुख चुनौतियों, अवसरों और साझेदारी की रणनीतियों की पहचान करना भी था। इसका लक्ष्य विभिन्न संगठनों के बीच सहयोग को मजबूत करना और २०२६-२०३० के लिए एक रणनीतिक वाईईएस+ रोडमैप तैयार करना भी था, ताकि भविष्य में समुदाय-आधारित पहलों को सही दिशा दी जा सके।

कॉन्फ्रेंस की शुरुआत मुख्य अतिथि सिक्योंग पेम्पा शेरिंग द्वारा पारंपरिक मक्खन का दीपक प्रज्वलित करने की रस्म के साथ हुई। मंच पर कशाग सचिव सेग्याल चुक्या द्रानी, गृह सचिव पाल्डेन धोंडुप, वित्त सचिव शेरिंग धोंडुप, शिक्षा सचिव जिग्मे नामग्याल और स्वास्थ्य सचिव जम्पा फुंट्सोक भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में तिब्बती पारिस्थितिकी तंत्र के २२ विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग ३२ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें प्रशिक्षण संस्थान, उद्यमिता मंच, सांस्कृतिक और डिजिटल नवाचार संगठन, युवा अधिकार समूह, विकास भागीदार और सीटीए के प्रतिनिधि शामिल थे।

अपने प्रारंभिक संबोधन के दौरान गृह सचिव पाल्डेन धोंडुप ने कहा कि युवाओं में बेरोजगारी (स्वतंत्र और गैर-स्वतंत्र- दोनों तरह के देशों में) बढ़ती हुई चिंता का विषय बन गई है। उन्होंने बताया कि तिब्बती युवाओं में भी बेरोजगारी बढ़ी है और इसी को ध्यान में रखते हुए वर्ष २०२२ से यह विचार बनाया गया था कि इस क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संगठनों और व्यक्तियों को एक मंच पर लाया जाए, ताकि कार्यबल से संबंधित चुनौतियों पर चर्चा की जा सके और तिब्बती समुदाय के लिए व्यावहारिक समाधानों की पहचान की जा सके। उन्होंने आगे कहा कि इस पहल का उद्देश्य तिब्बती युवाओं के रोजगार के भविष्य पर एक सकारात्मक प्रभाव डालना है।

गृह सचिव ने आगे कहा कि गृह विभाग के अंतर्गत वाईईएस+ युवा सशक्तिकरण डेस्क सबसे महत्वपूर्ण अनुभागों में से एक है, क्योंकि युवाओं के विकास की दिशा में काम करने से तिब्बती समुदाय के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित होता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कार्यबल में युवाओं की भागीदारी और मानव संसाधन का विकास अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने यह भी टिप्पणी की कि केवल शैक्षणिक डिग्रियां ही रोजगार की गारंटी नहीं देतीं। इसके साथ ही उन्होंने व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार, यह अनुभाग आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और युवा तिब्बतियों को राष्ट्र-निर्माण में योगदान देने के लिए सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाने वाला है।

हाल में तिब्बत से प्राप्त घरेलू आंकड़ों के आधार पर गृह सचिव ने कहा कि निर्वासन में रह रहे ८५,००० तिब्बतियों में से लगभग ६७ प्रतिशत लोग १५ से ५९ वर्ष की आयु के बीच हैं और काम करने के योग्य हैं। इनमें से १५.६ प्रतिशत लोग बेरोजगार हैं और कई युवा अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद भी बिना रोजगार के रह जाते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि कई वृद्ध तिब्बतियों को विदेशों में रहने वाले परिवार के सदस्यों द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है। इस बात ने ऐसी परियोजनाएं और कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता की जरूरत महसूस कराई, जो तिब्बती युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकें। उन्होंने आगे कहा कि यह सम्मेलन अपनी तरह की पहल है, जिसका उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए तिब्बती समुदाय को सशक्त बनाना है।

संबोधन के बाद वाईईएस+ युवा सशक्तिकरण सहायता डेस्क के प्रभारी और कार्यक्रम प्रमुख सोनम ताशी ने एक प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने वाईईएस+ कार्यक्रम और उसकी भविष्य की योजनाओं का परिचय दिया। उन्होंने कार्यबल विकास, साझेदारियों, रोजगार-योग्यता की तैयारी, वाईईएस पोर्टल और डेस्क के मुख्य फोकस- बैलाकुप्पे व लद्दाख की तिब्बती बस्तियों में दो नए वाईईएस+ तिब्बती करियर सेंटर की शाखाएं खोलने को लेकर रूपरेखा प्रस्तुत की।

वाईईएस+ कार्यक्रम के प्रबंधक संयुक्त सचिव तेनजिन खेनराब ने तिब्बती कार्यबल के डाटा के नमूने के आकार पर आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत किए। इस रिपोर्ट में निर्वासित तिब्बतियों की जनसांख्यिकीय स्थिति, स्कूलों में नामांकन दरें, बेरोजगारी के रुझान, वैश्विक कार्यबल के पैटर्न और तिब्बती कार्यबल की स्थिति पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया था। तिब्बती परिवारों के २०२३ में किए गए सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, तिब्बतियों की कुल आबादी ८५,७०० थी, जिसमें ५७,००० व्यक्ति और १०,००० से अधिक संस्थाएं (मठों सहित) शामिल थीं। आंकड़ों से यह भी पता चला कि निर्वासित तिब्बतियों में सालाना जन्मदर औसतन ४२० है, वहीं मृत्यु दर ११९ से अधिक है। रिपोर्ट में २०२५ के बाद से स्कूलों में नामांकन दर में भारी गिरावट का भी जिक्र किया गया है। स्कूलों में नामांकन २१,००० से घटकर १३,००० रह गई है, जो २०२५ में ३६ प्रतिशत की गिरावट को दर्शाता है।

वाईईएस+ कार्यक्रम के मुख्य सलाहकार तेनजिन नोरसांग ने भी 'बस्ती अधिकारी सर्वेक्षण' और भारत व वैश्विक स्तर पर कार्यबल के रुझानों से संबंधित अपने विचार रखे, साथ ही उन्होंने तिब्बती कार्यबल और जनसंख्या की वर्तमान स्थिति का संक्षिप्त मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

अपने मुख्य भाषण में सिक्योंग पेम्पा शेरिंग (गृह विभाग के कालोन या मंत्री भी हैं) ने उपस्थित हितधारकों का अभिवादन किया और उन्हें वाईईएस+ कार्यक्रम की योजनाओं के भविष्य में सफल कार्यान्वयन हेतु रणनीतिक रूप से सकारात्मक दिशा में बढ़ने वाले कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने विशेष रूप से गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओज) का स्वागत किया और उन्हें उन पहलों को स्वतंत्र रूप से शुरू करने के लिए प्रेरित किया, जो प्रशासनिक तंत्र की सीमित क्षमताओं से बाहर हैं। सिक्योंग ने तिब्बती समुदाय और प्रशासनिक कार्यों के भीतर सटीक एवं विश्वसनीय डाटा संग्रह को बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने समुदाय के कल्याण के लिए कार्यरत तिब्बती एनजीओज से आग्रह किया कि वे सर्वोच्च प्राथमिकता के स्तर पर लेकर सभी क्षेत्रों में तत्परता और सटीक डाटा संग्रह करें।

इसके अतिरिक्त, सिक्योंग ने अक्तूबर २०२४ से अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के गृह, शिक्षा और स्वास्थ्य विभागों को आवंटित 'निश्चित पुरस्कार राशि' के बारे में भी जानकारी दी। वाईईएस+ कार्यक्रम के महत्व और उसके व्यापक प्रभाव को स्वीकार करते हुए इस वर्ष गृह विभाग को उक्त पुरस्कार राशि में से लगभग ५ से ६ करोड़ रुपये मिले हैं।

तिब्बती युवाओं और प्रशासन के बीच संबंधों को मजबूत करने को लेकर सिक्योंग ने पिछली और मौजूदा- दोनों ही कशाग (मंत्रिमंडल) द्वारा शुरू किए गए अवसरों और युवा-केंद्रित कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने तिब्बती युवाओं को इन अवसरों का पूरा लाभ उठाने और प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने युवाओं को यह

भी सलाह दी कि वे व्यापक ज्ञान प्राप्त करके अपने भीतर आत्मविश्वास जगाएं, जिससे उन्हें अपने भविष्य के लिए मजबूत रास्ते बनाने में मदद मिलेगी।

सिक्योंग ने तिब्बती रोजगार बाजार में मौजूदा रुझानों और नर्सिंग पेशे में प्रवेश करने वाले युवाओं की बढ़ती संख्या और बेरोजगारी की समस्या के बावजूद प्रशासन के भीतर लेखा पदों के लिए आवेदन करने वालों की संख्या में गिरावट को लेकर सवाल उठाया। उन्होंने इस बात का आकलन करने की आवश्यकता पर जोर दिया कि क्यों कई प्रशिक्षित पेशेवर और विशेषज्ञ अंततः ऐसे क्षेत्रों में रोजगार पाते हैं, जिनका उनके प्रशिक्षण से कोई संबंध नहीं होता।

सिक्योंग ने दोहराया कि राजनीतिक स्तर पर बात की जाए, तो तिब्बत-चीन संघर्ष का समाधान केवल चीनी सरकार के साथ बातचीत के माध्यम से ही निकल सकता है, न कि किसी अन्य देश या वैश्विक ताकतों के हस्तक्षेप से। इसलिए, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती युवा आगे बढ़कर अपनी योजनाओं और कार्यक्रमों को शुरू करने की पूरी जिम्मेदारी स्वयं उठाएं। सिक्योंग ने मौजूदा चीनी नेतृत्व और उसकी कठोर नीतियों के मद्देनजर चीन-तिब्बत वार्ता की संभावनाओं के प्रति संदेह व्यक्त किया। हालांकि, उन्होंने यह आश्वासन भी दिया कि विश्वसनीय संपर्क स्थापित करने और बातचीत के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाने हेतु परदे के पीछे (बैकचैनल) बातचीत जारी रहेंगी। उन्होंने एक बार फिर इस बात की पुष्टि की कि चीनी सरकार के साथ बातचीत के माध्यम से तिब्बत-चीन संघर्ष को सुलझाने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' ही है।

अपने संबोधन के अंत में सिक्योंग ने सभी को मौजूदा कशाग के घोषणा-पत्र, 'तिब्बत का सुरक्षित भविष्य' को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इसका उद्देश्य केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व की व्यापक दृष्टि, कार्यशैली और तिब्बती लोगों तथा उनके उद्देश्य को बनाए रखने से जुड़े दीर्घकालिक लक्ष्यों को बेहतर ढंग से समझना है।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के मुख्य भाषण के बाद गृह विभाग के अतिरिक्त सचिव थुप्तेन शेरिंग ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उद्घाटन समारोह का समापन सिक्योंग के साथ एक संक्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र से हुआ, जिसके बाद सभी प्रतिभागियों और हितधारकों के साथ एक सामूहिक फोटो सत्र आयोजित किया गया।

इस पहले 'वाईईएस+ हितधारक सम्मेलन' को अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा वित्तपोषित किया गया है।

◆ ०३. सिक्योंग के नेतृत्व में सीटीए का प्रतिनिधिमंडल दिल्ली में अमेरिका के 'फ्रीडम २५०' समारोह में शामिल हुआ

२६ मई, २०२६

धर्मशाला। भारत में अमेरिका के राजदूत माननीय सर्जियो गोर के निमंत्रण पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, इसके सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग की कालोन (मंत्री) नोरजिन डोल्मा और नई दिल्ली में 'परम पावन दलाई लामा ब्यूरो' के प्रतिनिधि जिग्मे जुग्ने के साथ २४ मई २०२६ को दिल्ली में आयोजित 'फ्रीडम २५०: स्वतंत्रता दिवस स्वागत समारोह' में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के साथ शामिल हुए।

इस स्वागत समारोह में अमेरिकी विदेश मंत्री माननीय मार्को रूबियो, भारत के विदेश मंत्री माननीय सुब्रह्मण्यम जयशंकर और भारत में अमेरिकी राजदूत महामहिम सर्जियो गोर के संबोधन हुए। साथ ही, प्रख्यात भारतीय कलाकार ए.आर. रहमान द्वारा एक संगीत प्रस्तुति भी दी गई।

'परम पावन दलाई लामा ब्यूरो' की सचिव ताशी देकि भी तिब्बती प्रतिनिधिमंडल के साथ इस कार्यक्रम में उपस्थित रहीं।

◆ ०४. सीटीए की १७वीं कशाग के सिक्योंग के शपथ ग्रहण समारोह में उद्घाटन भाषण

२७ मई, २०२६

मैं अपने भाषण की शुरुआत विश्व शांति के दूत, अवलोकितेश्वर के साक्षात् स्वरूप, तिब्बत के सर्वोच्च रक्षक और प्रतीक, तथा तीनों लोकों के धर्म-राजा तिब्बत के महान चौदहवें दलाई लामा के प्रति अपने मन, वचन और कर्म से गहरी श्रद्धा और नमन अर्पित करते हुए करना चाहता हूं। मैं परम पावन दलाई लामा के प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करता हूं कि उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार किया और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की १७वीं कशाग के सिक्योंग के शपथ ग्रहण समारोह में अपनी पवित्र उपस्थिति से हमें अनुग्रहित किया।

मैं उन सभी सम्मानित अतिथियों के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, जिन्होंने विशेष रूप से इस समारोह में शामिल होने के लिए लंबी यात्रा तय की है। साथ ही, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के वर्तमान और पूर्व गणमान्य व्यक्तियों, यहां उपस्थित भिक्षु और गृहस्थ समुदाय को और विशेष रूप से तिब्बत के भीतर रहने वाले अपने साथी तिब्बतियों को भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

जब मैं २०२१ में सिक्योंग पद के उम्मीदवार के तौर पर खड़ा हुआ था, तो मैंने यह प्रण लिया था कि मैं किसी भी ऐसे चुनावी अभियान का हिस्सा नहीं बनूंगा, जिससे हमारे समुदाय के भीतर फूट पड़ सकती हो। अपनी उस प्रतिबद्धता पर कायम रहते हुए मैंने इस चुनाव के दौरान बिल्कुल भी प्रचार नहीं किया। फिर भी, जनता के भारी जनादेश के साथ मुझे दूसरी बार सिक्योंग के रूप में फिर से चुन लिया गया। इसके लिए, मैं उन सभी लोगों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस चुनावी प्रक्रिया में भाग लिया।

मेरा दृढ़ मत है कि राजनीति, प्रशासन और समाज कल्याण के क्षेत्रों में १६वीं कशाग की हर उपलब्धि, पूरी तरह से परम पावन चौदहवें दलाई लामा के परम आशीर्वाद और दूरदृष्टिपूर्ण भलाई के कामों की वजह से है। मैं तिब्बत के प्रति शपथ-बद्ध रक्षक देवताओं की अटूट और समय पर

मिली मदद का भी जिक्र करना चाहूंगा। कैबिनेट में मेरे तीन सहकर्मी, जिन्होंने अपने-अपने विभागों की जिम्मेदारियां बखूबी निभाईं और कशाग के प्रयासों में मिलकर योगदान दिया, सरकारी कर्मचारियों के समर्पित प्रयास के साथ-साथ संगठनों, मठों और आम लोगों के समुदायों की सामूहिक शक्ति, खास तौर पर तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बती लोगों का अटूट समर्पण - परम पावन दलाई लामा के प्रति उनकी भक्ति और चाहत तथा हमारी राष्ट्रीय पहचान को बचाए रखने का उनका पक्का इरादा ही प्रेरणा का मुख्य स्रोत है, जो हमारे काम को आगे बढ़ाता है। इस अवसर का उपयोग करते हुए मैं आप सभी के प्रति दिल से और पूरी ईमानदारी से आभार व्यक्त करता हूं।

१७वीं कशाग इस बात को फिर से दोहराती है कि काम करते समय वह परम पावन दलाई लामा के विचारों और सलाह पर ध्यान रखेगी। हम नियमों और कानूनों पर आधारित निष्पक्षता और न्याय को बनाए रखेंगे। सिद्धांतों पर आधारित नीतियों को लागू करके सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा देंगे और साझा लक्ष्यों को पाने के लिए आगे बढ़ेंगे। कशाग राजनीतिक और समाज कल्याण से जुड़ी ऐसी पहल करेगी, जिनका मुख्य लक्ष्य तिब्बत-चीन संघर्ष का कोई न्यायसंगत हल निकलने तक तिब्बती मुक्ति साधना की दीर्घकालिक परंपरा की स्थिरता को सुनिश्चित करना होगा।

राष्ट्रीयताओं के प्रति चीनी सरकार की वर्तमान में जो नीति चल रही है, उसमें बातचीत की गुंजाइश बहुत कम है। फिर भी १७वीं कशाग परम पावन दलाई लामा प्रणीत 'मध्यम मार्ग नीति' के प्रति पूरी तरह से समर्पित है। इस नीति का उद्देश्य अहिंसा, बातचीत और परस्पर लाभ वाला ऐसा हल निकालना है, जो चीन-तिब्बत संघर्ष का स्थायी समाधान हो। इसलिए, जब तक कोई हल नहीं निकल जाता, हम चीनी सरकार के साथ सावधानी और स्थिरता के साथ गुप्त माध्यमों से बातचीत जारी रखेंगे और साथ ही मध्यम मार्ग नीति के लिए अंतरराष्ट्रीय पहचान और समर्थन को मजबूत करने की रणनीतियों पर भी काम करते रहेंगे।

अमेरिका का 'तिब्बतन पॉलिसी एंड सपोर्ट ऐक्ट- २०२०' उन चीनी अधिकारियों के खिलाफ प्रतिबंध लगाने का प्रावधान करता है, जो परम पावन चौदहवें दलाई लामा के पुनर्जन्म की मान्यता में हस्तक्षेप करते हैं। इसी तरह, तिब्बत-चीन विवाद के समाधान को बढ़ावा देने वाला अधिनियम- 'रिजॉल्व तिब्बत ऐक्ट- २०२४' तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति को स्वीकार करता है और तिब्बत-चीन विवाद को एक अनसुलझा विवाद मानता है, जिसे अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत हल किया जाना आवश्यक है। इस संदर्भ में, हम परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म और एक संप्रभु देश के रूप में तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति के बारे में चीनी सरकार द्वारा फैलाए गए दुष्प्रचार और भ्रामक बातों का मुकाबला करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। साथ ही तिब्बती मुद्दे के लिए विश्व बिरादरी के समर्थन को मजबूत करने हेतु तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करते रहेंगे।

आज तिब्बत में सबसे बड़ी चुनौती चीनी सरकार द्वारा तिब्बतियों की राष्ट्रीय पहचान का व्यापक विनाश करने वाले सुनियोजित नीतियों को लागू करना है। इसके साथ ही, चीन ने जान-बूझकर गलत सूचना और दुष्प्रचार फैलाया है, ताकि निर्वासित समुदायों के भीतर फूट डाली जा सके, जिससे कि तिब्बती आंदोलन की एकता कमजोर हो जाए। इनमें केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, तिब्बती संगठन और समर्थक समूह शामिल हैं। इसलिए, सभी के लिए ऐसे हस्तक्षेपों के प्रति सतर्क रहना अत्यंत आवश्यक है। विशेष रूप से, जो लोग 'स्वैच्छिक तिब्बत वकालत समूह (वॉलेंटरी तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप)' और 'तिब्बत के लिए समर्थक समूहों' से जुड़े हैं, उन्हें अपनी जागरूकता बढ़ानी चाहिए, उन्हें अपने प्रयासों में समन्वय स्थापित करना चाहिए और सामूहिक रूप से अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर 'जनसंहार' और 'मानवता के विरुद्ध अपराधों' के मुद्दों को उठाना चाहिए।

तिब्बत मुद्दे को आगे बढ़ाने और तिब्बती समुदाय के कल्याण के लिए काम करने के लिए एक सुव्यवस्थित प्रशासन अनिवार्य है। १६वीं कशाग (मंत्रिमंडल) के कार्यकाल के दौरान, ई-गवर्नेंस (इलेक्ट्रॉनिक शासन) की पहलें शुरू की गई हैं। १७वीं कशाग इस पहल को और अधिक मजबूत करेगी, जिसके तहत कार्मिक, प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और संस्थागत प्रणालियों के आधार पर क्षमता बढ़ाई जाएगी। साथ ही बेहतर डाटा प्रबंधन और डाटाबेस प्रणालियों के माध्यम से ई-गवर्नेंस का विस्तार किया जाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का लाभ उठाने से वकालत के प्रयासों को बल मिलेगा, प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी, सार्वजनिक सेवाओं की डिलीवरी में सुधार होगा और समुदाय के साथ संचार मजबूत होगा। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो विशेष रूप से दुनिया भर में निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

जानकारी इकट्ठा करने, उसका विश्लेषण करने और उसे साझा करने के लिए प्रशासन की प्रबंधन प्रणालियों को मजबूत करके और तिब्बती मुद्दे तथा वहां के लोगों की आकांक्षाओं को उजागर करने के लिए सभी उपलब्ध माध्यमों का उपयोग करके, एक संचार रणनीति विकसित की जाएगी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी संबंधित पक्षों तक समय पर और स्पष्ट रूप से जानकारी पहुंचे।

निर्वासित तिब्बतियों को न केवल 'निर्वासित तिब्बतियों के चार्टर' और उसके शासी नियमों का पालन करना चाहिए, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और मेजबान देशों के कानूनों का पालन करना भी हमारे चार्टर का एक मूलभूत वादा है और निर्वासन में हमारे अस्तित्व को बनाए रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। १६वीं कशाग (मंत्रिपरिषद) ने लगातार यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया है कि यह प्रतिबद्धता पूरे तिब्बती प्रशासन और उसके स्वायत्त तथा अर्ध-स्वायत्त निकायों में प्रभावी ढंग से लागू हो। हम ऐसा करना भी जारी रखेंगे। इसके अलावा मेजबान देशों के कानूनों के अनुसार और उनके साथ सद्भाव में रहना न केवल एक शांतिपूर्ण और स्थिर जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह उन गरिमा और मूल्यों को बनाए रखने का भी एक प्रमुख माध्यम है, जिनका तिब्बती लोग प्रतिनिधित्व करते हैं।

बुजुर्गों, बेसहारा लोगों, बीमारों और शारीरिक तथा मानसिक कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों की देखभाल करना एक ऐसा मूल सिद्धांत है, जिसकी वकालत परम पावन दलाई लामा ने बार-बार की है और यह प्रशासन की एक अनिवार्य जिम्मेदारी भी है। पारदर्शिता, निष्पक्षता, दक्षता और निरंतरता के सिद्धांतों से निर्देशित होकर, कशाग सामाजिक कल्याण की विभिन्न पहलों को लागू करेगी। इनमें सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को पूरा करना और उसका प्रबंधन करना, युवाओं के कौशल का विकास करना, अधिक दक्षता के लिए स्कूलों का एकीकरण करना तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और निवारक सेवाएं प्रदान करना शामिल है। इन सभी कार्यों में कमजोर वर्गों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और निर्वासित तिब्बती समुदाय के भीतर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना, तिब्बती उद्देश्य को बनाए रखने के लिए

अत्यंत महत्वपूर्ण बना हुआ है। हम उन सभी लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस प्रयास में योगदान दिया है और हम संगठनों तथा व्यक्तियों- दोनों से ही लगातार सामूहिक रूप से कार्य करते रहने का आग्रह करते हैं।

१७वां कशाग यह सुनिश्चित करने की गंभीरता से प्रतिज्ञा करता है कि सभी आधिकारिक जिम्मेदारियां सुचारू रूप से निभाई जाएंगी और परम पावन दलाई लामा समुदाय के तुच्छ मामलों से अनावश्यक रूप से परेशान नहीं होंगे और हम तिब्बत के अंदर तिब्बतियों का विश्वास जीतना जारी रखेंगे। पिछले साल से, घोटोन समारोहों के साथ-साथ, कई संगठनों और व्यक्तियों ने परम पावन दलाई लामा को लंबी उम्र की प्रार्थना की है। सबसे सार्थक पेशकश, जो हम कर सकते हैं वह है उनकी शिक्षाओं को व्यवहार में लाना। इसलिए हम सभी तिब्बतियों से राजनीतिक निर्वासितों के रूप में हमारी साझा पहचान को याद रखने, मतभेदों को दूर करने, एकता को बढ़ावा देने और तिब्बत के सामान्य कारण के प्रति अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को पूरा करने का आग्रह करते हैं।

तिब्बती राष्ट्रीय पहचान को कमजोर करने के चीनी सरकार के सुनियोजित प्रयासों के बावजूद, चीन तिब्बती लोगों के अपनी मातृभूमि के साथ स्थायी बंधन को कमजोर नहीं कर सकता है। सभ्यता की शुरुआत के बाद से, तिब्बती गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध के कारण बर्फ की भूमि के असली संरक्षक बने हुए हैं। इसलिए हम तिब्बत के तिब्बतियों से आग्रह करते हैं कि वे अपने बच्चों में तिब्बती भाषा, धर्म और संस्कृति में निहित पहचान की मजबूत भावना का पोषण करके घरेलू स्तर से शुरुआत करें।

मैं इस अवसर पर भारत और अमेरिका की सरकारों के साथ लोगों और हमारे सभी समर्थकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। आपका समर्थन सत्य और न्याय के लिए हमारे संघर्ष को प्रभावी ढंग से जारी रखने की कुंजी है।

अंत में, मैं परम पावन चौदहवें दलाई लामा के लंबे जीवन के लिए प्रार्थना करता हूं और चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं में सन्निहित उनके महान विचार दुनिया भर में फैलते रहें। तिब्बत के अंदर और बाहर रह रहे तिब्बतियों के पुनर्मिलन का शुभ दिन जल्द ही सामने आए।

पेन्पा शेरिंग

सिक्योंग

◆ ०५. तिब्बत म्यूजियम का कोलकाता में शैक्षणिक भ्रमण संपन्न

०२ मई, २०२६

धर्मशाला। तिब्बत म्यूजियम (संग्रहालय) की टीम ने हाल ही में कोलकाता में एक हफ्ते का संग्रहालयों के शैक्षणिक भ्रमण का अपना कार्यक्रम संपन्न किया। इसका मकसद पेशेवराना जानकारी बढ़ाना और पूरे भारत में संग्रहालयों से जुड़े अलग-अलग कामों का व्यावहारिक अनुभव हासिल करना था।

शिक्षण की अहम पहल के तौर पर आयोजित इस भ्रमण ने संग्रहालय के कार्यों से जुड़े पेशेवरों को सांस्कृतिक, कलात्मक या ऐतिहासिक सामग्रियों के चयन, संदर्भ निर्धारण और प्रस्तुतिकरण की शोध-आधारित प्रक्रियाओं (क्यूरेटोरियल मेथड), किसी उत्पाद, कलाकृति, विज्ञान मॉडल या विचार को दर्शकों के सामने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की कला (एग्जिबिशन टेक्नीक्स) और किसी वेबसाइट, प्रदर्शनी या भौतिक स्थान पर आने वाले लोगों की रुचि को आकर्षित करने, उन्हें जोड़े रखने और एक यादगार अनुभव देने की कला (विजिटर एंगेजमेंट) की रणनीतियों को समझने का मौका दिया। इसके लिए उन्होंने संग्रहालय से संबद्ध प्रमुख संस्थानों का दौरा किया और वहां के लोगों से बातचीत की।

इस यात्रा की शुरुआत ११ अप्रैल को रात भर की बस यात्रा कर नई दिल्ली पहुंचने के साथ हुई। १२ अप्रैल को नई दिल्ली पहुंचने पर टीम ने राष्ट्रीय संग्रहालय (नेशनल म्यूजियम) का दौरा किया, जहां उन्होंने सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर बाद के ऐतिहासिक दौर तक की चीजें देखीं। हड़प्पा गैलरी और बौद्ध कला संभाग ने प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के बारे में अहम जानकारी दी।

१३ अप्रैल को टीम कोलकाता के लिए रवाना हुई, जहां भ्रमण (टूर) का मुख्य कार्यक्रम शुरू हुआ। अगले दिन उन्होंने बिड़ला इंडस्ट्रियल एंड टेक्नोलॉजिकल म्यूजियम और इंडियन म्यूजियम का दौरा किया। बिड़ला म्यूजियम में इंटरैक्टिव एग्जिबिट्स, खासकर कोल माइन शो ने सीखने का शानदार अनुभव दिया। इंडियन म्यूजियम में मूर्तियों, जीवाश्मों और ऐतिहासिक कलाकृतियों के वृहद संग्रह ने टीम को प्रभावित किया। टीम ने मशहूर हावड़ा ब्रिज का भी दौरा किया, जो शहर की जीवंतता का प्रतीक और वास्तुकला का एक अहम मील का पत्थर है।

१५ अप्रैल को टीम ने जनरल पोस्ट ऑफिस में पोस्टल म्यूजियम और फिलाटेलिक लाइब्रेरी (डाक टिकट संग्रहालय) का दौरा किया और संचार प्रणाली के विकास के बारे में जानकारी हासिल की। बाद में, उन्होंने एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स का भ्रमण किया, जहां उन्होंने कलात्मक अभिव्यक्ति के कई रूप देखे।

टीम ने १६ अप्रैल को मदर टेरेसा हाउस का दौरा किया गया, जहां के शांत माहौल ने टीम पर गहरा असर डाला। इसके बाद आरबीआई संग्रहालय का भ्रमण हुआ, जिससे भारत के आर्थिक इतिहास और नोटों के विकास के बारे में जानकारी मिली। विक्टोरिया मेमोरियल में टीम ने संरक्षण और संग्रह प्रबंधन (कलेक्शन मैनेजमेंट) के कुशल कर्मियों से बातचीत की और किसी वस्तु, स्थिति, अधिकार या स्वास्थ्य को उसकी मूल, पुरानी या अच्छी अवस्था में वापस लाने (रेस्टोरेशन) की तकनीकों, बचाव के तरीकों और व्यवस्थित तरीके से चीजें हासिल करने की प्रक्रियाओं के बारे में सीखा।

इस दौरे की एक खास बात तिब्बत संग्रहालय के निदेशक की ओर से दी गई प्रस्तुति थी, जिसका शीर्षक था 'तिब्बत संग्रहालय के २५ साल और तिब्बत'। इसमें संस्थान के सफर, उपलब्धियों और भविष्य की सोच के बारे में बताया गया।

१७ अप्रैल को टीम ने साइंस सिटी का दौरा किया, जहां इंटरैक्टिव एग्जिबिट्स (ऐसी प्रदर्शनियां होती हैं जो दर्शकों को केवल देखने के बजाय सक्रिय रूप से शामिल होने, छूने और अनुभव करने का अवसर देती हैं। ये आधुनिक तकनीक और बहु-संवेदी तरीकों का उपयोग करके नीरस जानकारी को रोमांचक और यादगार बनाती हैं।) ने शिक्षा और

मनोरंजन का बेहतरीन मेल पेश किया। टीम उसी शाम दिल्ली के लिए रवाना हुई और १८ अप्रैल को दिल्ली पहुंच गई। उसी दिन, उन्होंने भगवान बुद्ध के पिपरहवा अवशेषों की प्रदर्शनी देखी, जिन्हें हाल ही में २०२५ में भारत वापस लाया गया था। अवशेषों और उनसे जुड़ी चीजों वाली इस प्रदर्शनी के अवलोकन के साथ टीम के भ्रमण का सार्थक समापन हुआ।

यह दौरा बहुत ज्ञानवर्धक रहा, जिससे तिब्बत संग्रहालय की टीम को इनोवेटिव एग्जिबिशन डिजाइन (एक ऐसी प्रक्रिया है जो कला, तकनीक और कहानी कहने के माध्यम से दर्शकों को एक आकर्षक और यादगार अनुभव प्रदान करती है), कहानी कहने के तरीकों और दर्शकों को जोड़ने की रणनीतियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिली। इससे सदस्यों के बीच टीम वर्क और सहयोग भी मजबूत हुआ और संग्रहालय के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए सम्मिलित सोच को बढ़ावा मिला।

कुल मिलाकर, उम्मीद है कि यह अनुभव तिब्बत संग्रहालय की भविष्य की पहलों में अहम योगदान देगा और उनके काम में ज्यादा रचनात्मक, नवोन्मेषी और असर लाने के लिए प्रेरित करेगा।

- सीटीए के डीआईआईआर के तहत तिब्बत संग्रहालय की रिपोर्ट

◆ ०६. ब्रसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा ११वें पंचेन लामा के ३७वें जन्मदिन और उनके जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी पर मुहिम

१८ मई, २०२६

ब्रसेल्स, १७ मई। पिछले साल ११वें पंचेन लामा के ठिकाना पता करने के लिए चलाए गए महीने भर के वैश्विक जागरूकता अभियान के बाद 'ऑफिस ऑफ तिब्बत ब्रसेल्स' ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्की न्यिमा के ३७वें जन्मदिन (२५ अप्रैल) और उनके जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी के मौके पर अपनी जोरदार राजनयिक मुहिम जारी रखे हुए है।

इस मुहिम के तहत 'ऑफिस ऑफ तिब्बत ब्रसेल्स' दुनिया भर के नेताओं और यूरोपीय संसद के सदस्यों से संपर्क कर रहा है। वे उनसे अपील कर रहे हैं कि वे बीजिंग पर दबाव डालें ताकि ११वें पंचेन लामा के जीवित होने और उनकी सलामती का पक्का सबूत मिल सके और उनकी तुरंत रिहाई की मांग की जा सके।

मुहिम को व्यापक बनाने के लिए एक खास पैम्फलेट जारी किया गया, जिसमें तिब्बत के तीन पूर्व राजनीतिक कैदियों की अपीलें शामिल थीं। उनके निजी अनुभव तिब्बत में चीनी शासन के तहत झेली गई तकलीफों को दिखाते हैं। अपने संदेशों के जरिए उन्होंने दुनिया के नेताओं से अपील की कि वे ११वें पंचेन लामा के ठिकाने का पता लगाने की कोशिशों का समर्थन करें।

३० अप्रैल को यूरोपीय संसद ने 'नस्लीय एकता और प्रगति' पर नया चीनी कानून और नस्लीय समुदायों पर बढ़ता दमन' नाम से एक अहम प्रस्ताव पास किया। इस प्रस्ताव में खास तौर पर ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्की न्यिमा की तुरंत रिहाई की मांग की गई। साथ ही तिब्बत में मानवाधिकारों से जुड़े अन्य अहम मुद्दों पर भी बात की गई, जिसमें पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का बड़े लामाओं (परम पावन १४वें दलाई लामा भी शामिल हैं) के पुनर्जन्म में दखल देना शामिल है।

मुहिम को और ज्यादा राजनयिक महत्व प्रदान करते हुए यूरोपियन कमिश्नर हाजा लाहबिब ने यूरोपीय संसद के पूर्ण सत्र (प्लेनरी सेशन) की बहस के बाद अपनी बात रखते हुए दोहराया कि ईयू ११वें पंचेन लामा के ठिकाने और उनकी सलामती के बारे में भरोसेमंद जानकारी की मांग लगातार करता रहेगा। साथ ही, उन्होंने अन्य अहम मुद्दों पर भी बात की। ब्रसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के चल रहे अभियान को आगे बढ़ाते हुए बेल्जियम में प्रमुख तिब्बती संगठनों ने ब्रसेल्स स्थित 'इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत' और लुंगता तिब्बत समर्थक समूह के साथ मिलकर रविवार १७ मई को ब्रसेल्स शहर के सेंटर में एक शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन पंचेन लामा के जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी पर आयोजित किया गया था।

खराब मौसम के बावजूद प्रदर्शनकारी अपना संदेश पहुंचाने में डटे रहे। वे नारे लगा रहे थे- 'पंचेन लामा कहां हैं?' तिब्बत कार्यालय, ब्रसेल्स का प्रतिनिधित्व तिब्बती संपर्क अधिकारी धुंडुप ग्यालपो और ईयू एडवोकेसी अधिकारी तेनजिन फुंट्सोक ने किया।

- तिब्बत कार्यालय, ब्रसेल्स की रिपोर्ट

◆ ०७. तिब्बत संग्रहालय ने ११वें पंचेन लामा के जबरन गायब किए जाने की ३१वीं बरसी पर 'इंटरनेशनल म्यूजियम डे' मनाया

१९ मई, २०२६

धर्मशाला। तिब्बत के दूसरे स्तर के धर्मगुरु ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्की न्यिमा के जबरदस्ती गायब किए जाने के ३१ साल पूरे होने पर तिब्बत संग्रहालय ने १७ मई को बच्चों के लिए एक एक्टिविटी-बेस्ड लर्निंग प्रोग्राम (गतिविधि-आधारित शिक्षण कार्यक्रम) आयोजित किया। गेधुन चोएक्की न्यिमा को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) ने तब अगवा कर लिया था, जब वे सिर्फ छह साल के थे। इस प्रोग्राम का मकसद बच्चों को इस अहम घटना और तारीख के बारे में ज्यादा जागरूक करना था और इसमें पंचेन लामा की कहानी पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत एक दिलचस्प प्रस्तुति से हुई, जिसमें १०वें और ११वें पंचेन लामा का संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके बाद एक बिंगो गेम हुआ, जिसमें प्रस्तुति पर आधारित सवाल पूछे गए थे और फिर 'सांप-सीढ़ी' का खेल हुआ। इस खेल में आगे बढ़ने के लिए छात्रों को सही जवाब देने थे। कार्यक्रम में बच्चों के लिए कलरिंग एक्टिविटी भी शामिल थी।

अपराह्न में छात्रों ने पंचेन रिनपोछे के लिए एक यादगार गीत गाया, जिसे 'सॉन्ग ऑफ लॉन्गिंग (याद का गीत)' के नाम से भी जाना जाता है। कुल ३४ छात्रों ने पूरे उत्साह के साथ इन गतिविधियों में हिस्सा लिया। तिब्बत

संग्रहालय के अनुसार, 'हमें उम्मीद है कि जो बच्चे पहले इस स्थिति से अनजान थे, उन्हें इसकी बेहतर समझ मिली होगी और जो पहले से ही पंचेन लामा के बारे में जानते थे, वे इस मुद्दे पर गहरी समझ विकसित कर पाए होंगे।'

अगले दिन, १८ मई २०२६ को तिब्बत संग्रहालय ने 'म्यूजियम्स यूनाइटिंग अ डिवाइडेड वर्ल्ड (बंटी हुई दुनिया को जोड़ने वाले म्यूजियम)' की प्रेरणादायक ग्लोबल थीम के तहत ४९वां 'इंटरनेशनल म्यूजियम डे' गर्व और सफलता के साथ मनाया। इस मौके पर खास मेहमान, तिब्बती समुदाय के सदस्य, विद्वान और धर्मशाला स्थित विभिन्न तिब्बती संस्थानों और संग्रहालय के प्रतिनिधि शामिल हुए। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान, यादों को ताजा करने और एकजुटता के लिए एक सार्थक माहौल बना।

इस जश्न की एक खास बात केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के आधिकारिक प्रवक्ता और अतिरिक्त सचिव तेनजिन लेक्षय द्वारा 'द तिब्बती म्यूजियम जर्नल- वॉल्यूम ३' का आधिकारिक तौर पर विमोचन किया जाना था।

कार्यक्रम में शानदार 'कम्युनिटी स्पॉटलाइट' सत्र और एक सचित्र प्रदर्शनी लगाई गई थी, जिसने पूरे दिन आने वाले लोगों का ध्यान आकर्षित किया। साझा कहानियों और बातचीत के जरिए इस कार्यक्रम ने तिब्बती लोगों की मजबूत सहनशक्ति और अलग-अलग देशों और पीढ़ियों के समुदायों को जोड़ने में संग्रहालय की अहम भूमिका को उजागर किया। यह कार्यक्रम एक सुखद और प्रेरणादायक माहौल में संपन्न हुआ, जिससे प्रतिभागियों में एकता और चिंतन की नई भावना जगी।

- रिपोर्ट: द तिब्बत म्यूजियम, डीआईआईआर, सीटीए

◆ ०८. नई दिल्ली में डॉ. निर्मला देशपांडे की याद में एबीआरएस द्वारा आयोजित वैश्विक शांति संगोष्ठी में आईटीसीओ शामिल

०२ मई, २०२६

नई दिल्ली। अखिल भारत रचनात्मक समाज (एबीआरएस) द्वारा आयोजित 'वैश्विक शांति संगोष्ठी या ग्लोबल पीस सिम्पोजियम' का उद्घाटन सत्र ०१ मई, २०२६ को नई दिल्ली के साउथ एवेन्यू स्थित एम. पी. क्लब में हुआ। यह कार्यक्रम डॉ. निर्मला देशपांडे की १८वीं पुण्यतिथि और बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित किया गया। इस समारोह का नेतृत्व विभूति कुमार मिश्रा, राजेंद्र देशपांडे और रमेश जैन ने किया।

अखिल भारत रचनात्मक समाज की संस्थापक डॉ. निर्मला देशपांडे (१९२९-२००८) एक जानी-मानी गांधीवादी और शांतिवादी कार्यकर्ता थीं। वे भूदान आंदोलन से गहराई से जुड़ी थीं और इस दौरान उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के साथ लगभग ४०,००० किलोमीटर की पदयात्रा की थी। उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था और कई अंतरराष्ट्रीय सम्मान भी मिले थे। उन्होंने कई देशों में शांति मिशनों का नेतृत्व किया और १९९० के बाद कश्मीर के शांति प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित किया गया। पहले सत्र (सुबह १०:३० बजे से दोपहर १:०० बजे तक) में रचनात्मक कार्यकर्ताओं की बैठक हुई और डॉ. निर्मला देशपांडे को श्रद्धांजलि दी गई। दूसरे सत्र (दोपहर ३:३० बजे से शाम ५:३० बजे तक) में विश्व शांति, तिब्बत की स्वतंत्रता और भारत की सुरक्षा पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद स्वागत भाषण और श्रद्धांजलि का दौर चला। वक्ताओं ने महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध के आदर्शों से प्रेरणा लेते हुए आज के वैश्विक संदर्भ में शांति, अहिंसा और सांप्रदायिक सद्भाव के महत्व पर जोर दिया।

नोएडा फिल्म सिटी से जुड़े निदेशक और मारवाह स्टूडियोज के संस्थापक डॉ. संदीप मारवाह ने भी डॉ. निर्मला देशपांडे के जीवन और उनकी विरासत पर अपने विचार रखे। उन्होंने उन्हें एक ऐसी अथक शांति-निर्माता बताया, जिनके काम ने सीमाओं, समुदायों और विचारधाराओं के बीच की दीवारों को गिरा दिया। उन्होंने गांधीवादी मूल्यों के प्रति श्रीमती देशपांडे की अटूट प्रतिबद्धता को उजागर करते हुए हाशिए पर धकेले गए समुदायों के साथ उनके जमीनी जुड़ाव और बातचीत व सहानुभूति के जरिए लोगों को एक साथ लाने की असाधारण क्षमता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय एकता और अंतरराष्ट्रीय शांति प्रयासों में उनका योगदान आज की संघर्षपूर्ण दुनिया में भी बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने उनकी करुणा, विनम्रता और अहिंसा के प्रति समर्पण को उजागर किया और प्रतिभागियों से उनके मिशन को अपने काम और जीवन में आगे बढ़ाने का आग्रह किया।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की समन्वयक ताशी देकि ने आईटीसीओ की भूमिका और उद्देश्यों के बारे में बात की। उन्होंने डॉ. देशपांडे को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें शांति, करुणा और अहिंसा की आजीवन समर्थक के रूप में याद किया और तिब्बती मानवीय मुद्दों के लिए उनके मजबूत समर्थन पर प्रकाश डाला। उन्होंने उन्हें तिब्बती लोगों का एक सच्चा दोस्त और शुभचिंतक बताया, जिन्होंने हमेशा बातचीत, न्याय और संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा दिया।

बुद्ध पूर्णिमा के महत्व पर भी चर्चा की गई, जिसमें करुणा, सद्भाव और आंतरिक शांति के सार्वभौमिक संदेश को दोहराया गया। उद्घाटन सत्र एक प्रेरणादायक प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को शांति, एकता और अहिंसा के रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया गया और आगे की संगोष्ठी के लिए एक सार्थक माहौल तैयार किया गया।

कार्यक्रम में आईटीसीओ की समन्वयक ताशी देकि के साथ वहां के कर्मचारियों ने भी भाग लिया और कार्यक्रम में एक स्मारिका (सोवेनियर) भेंट की गई।

- आईटीसीओ, नई दिल्ली की रिपोर्ट

◆ ०९. भारत-तिब्बत सहयोग मंच का हिमालयी मुद्दे पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक और सेमिनार संपन्न

जम्मू, ३ मई २०२६। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने जम्मू की सैनिक कॉलोनी स्थित गैलेक्सी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में '२१वीं सदी में हिमालय: भारत की सुरक्षा, चुनौतियां और उभरते आयाम' विषय पर दो दिवसीय सेमिनार और राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक का आयोजन किया। इस बैठक की अध्यक्षता बीटीएसएम के मार्गदर्शक डॉ. इंद्रेश कुमार द्वारा की गई। उनके गरिमामयी मार्गदर्शन और विचारों ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की चर्चाओं और रणनीतिक प्रस्तावों की दिशा स्पष्ट की।

उद्घाटन सत्र में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री थुप्टेन लुंगरिग मुख्य अतिथि थे। साथ ही, निर्वासित तिब्बती संसद (१७वीं संसद) के वरिष्ठ सांसद दावा शेरिंग भी उपस्थित रहे। अन्य विशिष्ट अतिथियों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री रूपेश कुमार, बीटीएसएम के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री पंकज गोयल, लेफ्टिनेंट जनरल आर.के. शर्मा (सेवानिवृत्त) और बीटीएसएम जम्मू के श्री संजीव मनमोत्रा शामिल थे।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की समन्वयक ताशी देकि ने गैलेक्सी कॉलेज के छात्रों और बीटीएसएम के राज्यों से आए प्रतिनिधियों सहित सभी प्रतिभागियों को तिब्बत से संबंधित पुस्तकें और ब्रोशर वितरित कर इस कार्यक्रम की महत्ता में चार चांद लगा दिए। इस पहल से तिब्बत के इतिहास, संस्कृति और चल रहे संघर्ष के बारे में प्रामाणिक जानकारी लोगों को मिली और चर्चाएं समृद्ध हुईं। इसके साथ ही उपस्थित लोगों में जागरूकता का संचार हुआ।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन और सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम' के गायन के साथ हुई, जो श्रद्धा और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक था। इसके बाद श्री पंकज गोयल ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने देश भर से आए प्रतिनिधियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और हिमालय से जुड़े मुद्दे के प्रति प्रतिनिधियों की प्रतिबद्धता की सराहना की।

अपने संबोधन में श्री गोयल ने संगठन के मिशन, 'तिब्बत की स्वतंत्रता और कैलाश मानसरोवर की मुक्ति' के प्रति अटूट समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए संघ कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने वैश्विक मंच पर चीनी शासन की भ्रामक नीतियों और कार्यों को बेनकाब करने के लिए व्यापक जन-जागरूकता की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य अतिथि कसूर थुप्टेन लुंगरिग ने सभा को संबोधित करते हुए मार्गदर्शक डॉ. इंद्रेश कुमार का आभार व्यक्त किया, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व ने इस नेक संगठन को जन्म दिया और जो हमारे मिशन को लगातार प्रेरित कर रहे हैं। लगभग २६ वर्षों से, यह संगठन भारत और तिब्बत के लोगों के बीच एक पुल की तरह काम कर रहा है। यह दोस्ती, आध्यात्मिकता और आपसी सम्मान के उन पुराने रिश्तों को दर्शाता है, जिन्होंने सदियों से हमारी सभ्यताओं को जोड़े रखा है।

उन्होंने एक प्रभावशाली भाषण दिया और भारत की सुरक्षा और उसकी सदियों पुरानी सांस्कृतिक पहचान के लिए एक 'बफर स्टेट' के तौर पर तिब्बत के रणनीतिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत की स्थिरता भारत की संप्रभुता और सभ्यता की निरंतरता से अटूट रूप से जुड़ी हुई है।

उन्होंने चीन-तिब्बत विवाद के सबसे व्यावहारिक और शांतिपूर्ण समाधान के तौर पर 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' के महत्व पर भी प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की 'चीनीकरण' नीतियों पर गहरी चिंता जताई। इन नीतियों में औपनिवेशिक शैली के आवासीय विद्यालय शुरू करना शामिल है, जिनका मकसद तिब्बतियों को हान-चीनी विचारधारा में ढाल लेना है। इस नीति के तहत तिब्बती स्कूलों को जबरन बंद किया जा रहा है, ये सभी कदम तिब्बती भाषा, संस्कृति और पहचान के मूल स्वरूप को कमजोर करने के लिए उठाए जा रहे हैं।

कसुर थुप्टेन लुंगरिग ने प्रतिभागियों से बदलते भू-राजनीतिक हालात को लेकर सतर्क रहने का आग्रह किया। कसुर ने 'भारत-तिब्बत सहयोग मंच' का इस बात के लिए आभार व्यक्त किया कि मंच ने तिब्बत की आजादी और सम्मान के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने, तिब्बती व्यापारियों और परिवारों को व्यावहारिक मदद देने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करने, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तिब्बतियों के अधिकारों की वकालत करने और मुश्किल समय में मानवीय सहायता पहुंचाने में लगातार सहयोग दिया है।

अंत में, उन्होंने तिब्बती मुद्दे के प्रति अटूट एकजुटता और इस न्यायपूर्ण संघर्ष के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति दिल से धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेफ्टिनेंट जनरल आर.के. शर्मा (रिटायर्ड) ने रणनीतिक तैयारी, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक जागरूकता को मिलाकर एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की वकालत की। उन्होंने जोर दिया कि हिमालय से जुड़ी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

इसके बाद, श्री इंद्रेश कुमार ने अपना ओजपूर्ण मुख्य भाषण दिया। उन्होंने हिमालय को भारत की प्राकृतिक सुरक्षा ढाल और सांस्कृतिक प्रहरी बताया और कहा कि इनके पारिस्थितिकी या रणनीतिक संतुलन में कोई भी हीलाहवाली भारत की संप्रभुता के लिए सीधी चुनौती होगी।

उन्होंने सभा से हिमालयी क्षेत्र के सामने मौजूद भू-राजनीतिक चुनौतियों का गंभीरता से विश्लेषण करने का आग्रह किया और स्पष्ट राष्ट्रीय नीतियों, जमीनी स्तर पर सक्रिय भागीदारी और सीमावर्ती क्षेत्रों के निरंतर विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) की विस्तारवादी प्रवृत्तियों के प्रति आगाह किया और उसकी घुसपैठ की पुरानी रणनीति और १९५९ में तिब्बत पर अवैध कब्जे का जिक्र किया। ये घटनाएं उन खतरों की शिद्दत से याद दिलाता है, जिनसे भारत को सावधान रहने की जरूरत है।

रणनीतिक चिंताओं के अलावा, उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों के पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के महत्व पर जोर दिया और कहा कि पारिस्थितिकीय स्थिरता राष्ट्रीय सुरक्षा से अलग नहीं की जा सकती। उन्होंने अपने इस सशक्त आह्वान के साथ भाषण का समापन किया कि 'हिमालय की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय जागरूकता, एकता और सामूहिक जिम्मेदारी को मजबूत करना है, ताकि भारत की संप्रभुता और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहे।'

उद्घाटन सत्र का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में २८० से अधिक प्रतिभागियों/ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिनमें जम्मू के गैलेक्सी कॉलेज के छात्र भी शामिल थे। दो दिन चली इस बैठक में कई सत्र हुए, जिनमें राष्ट्रीय सुरक्षा, हिमालय की सुरक्षा से जुड़ी रणनीतिक

जरूरतों, पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं, पारिस्थितिकीय संतुलन और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा, नीति निर्माण और टिकाऊ विकास व राष्ट्रीय तैयारी के लिए सुझावों पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में पूरे भारत से बुद्धिजीवी, नीति-निर्माता, सेना के रिटायर्ड अधिकारी और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए, ताकि हिमालय के रणनीतिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय महत्व पर विचार-विमर्श किया जा सके।

- आईटीसीओ, नई दिल्ली की रिपोर्ट

◆ १०. देहरादून के तिब्बती बस्ती अधिकारी ने बुद्ध पूर्णिमा (वेसाक) महोत्सव में भाग लिया

०५ मई, २०२६

देहरादून। देहरादून स्थित तिब्बती सेटलमेंट के अधिकारी डॉ. सेवांग फुंट्सोक ने ०१ मई २०२६ को डेक्यिलिंग तिब्बती बस्ती के पास जया सिद्धार्थ अस्पताल द्वारा आयोजित बुद्ध पूर्णिमा (वेसाक) समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर भाग लिया। इस कार्यक्रम में तिब्बती सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां हुईं और सिद्धार्थ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन श्री दुर्गा प्रसाद वर्मा और जया ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के डायरेक्टर डॉ. कुमार प्रशांत ने भी भाषण दिए। डॉ. सेवांग फुंट्सोक के साथ डेक्यिलिंग की स्थानीय तिब्बती असेंबली के उपाध्यक्ष तेनजिन चोफेल और देहरादून फ्रीडम मूवमेंट ऑफिस के अध्यक्ष सेवांग धोंडुप भी मौजूद थे।

इस कार्यक्रम में आसपास की तिब्बती बस्तियों के कैंप लीडर्स के साथ-साथ विधि, नर्सिंग और फार्मेसी कॉलेज व अस्पताल के कर्मियों, डॉक्टरों तथा छात्रों ने भी हिस्सा लिया।

सभा में डॉ. सेवांग ने बताया कि कैसे तिब्बत में तीन धार्मिक राजाओं- सोंगत्सेन गैम्पो, ट्रिसोंग डुएटसेन और ट्राई-राल्पाचेन के शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ। इन राजाओं ने भारत के नालंदा से विद्वानों को तिब्बत आमंत्रित किया और संस्कृत से तिब्बती भाषा में अनुवाद का काम करवाया। यह न केवल भारत और तिब्बत के बीच प्राचीन ऐतिहासिक और आध्यात्मिक संबंधों का संकेत है, बल्कि तिब्बती ग्रंथों में बुद्ध की शिक्षाओं को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने परम पावन दलाई लामा की विरासत को बुद्ध की शिक्षाओं से जोड़ा, जिससे उन्हें शांति के वैश्विक प्रतीक के रूप में दुनिया भर में पहचान मिली है। अहिंसा, प्रेम, करुणा, सहनशीलता, क्षमा, दया और सार्वभौमिक जिम्मेदारी के बारे में परम पावन के संदेश आज की दुनिया में मानवता का मार्गदर्शन कर रहे हैं। बुद्ध की शिक्षाओं को असल जीवन में अपनाने के कारण, परम पावन को २०० से ज्यादा पुरस्कार, मानद डॉक्टरेट और सम्मान मिले हैं। इनमें १९८९ में नोबेल शांति पुरस्कार, २००७ में अमेरिकी कांग्रेसनल गोल्ड मेडल और २०१२ में टेम्पलटन पुरस्कार शामिल हैं। परम पावन ने अपने संदेशों को फैलाने के लिए ६७ से ज्यादा देशों की यात्रा की है, जिससे मानवता को बहुत फायदा हुआ है। इसके अलावा, डॉ. सेवांग ने परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं और आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में एसईई (सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षण) को शामिल करने पर जोर दिया, जिससे शांतिपूर्ण समुदायों और दुनिया को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।

उन्होंने परम पावन के ९०वें जन्मदिन के मौके पर शुरू किए गए 'घोटोन' (करुणा का वर्ष) के बारे में बताया और देहरादून के तिब्बतियों द्वारा किए गए मुफ्त भोजन, कंबल और कपड़े बांटने जैसे कामों और 'घोटोन' की अन्य गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने श्री दुर्गा प्रसाद वर्मा को 'घोटोन' की यादगार चीजें भेंट कीं, जिनमें परम पावन की आत्मकथा की नई किताब 'वॉइस फॉर द वॉयसलेस' भी शामिल है। डॉ. सेवांग ने उनसे अनुरोध किया कि वे एक किताब कॉलेज की लाइब्रेरी में रखें।

अस्पताल ने उस दिन एक मुफ्त मेडिकल चेकअप शिविर का भी आयोजित किया।

डॉ. सेवांग ने देहरादून में सर्वे चौक के पास आईआरडीटी ऑडिटोरियम में शाम को 'दून बौद्ध समिति' के निमंत्रण पर एक और बुद्ध पूर्णिमा (वेसाक) महोत्सव में मुख्य अतिथि के तौर पर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में अरुणाचल प्रदेश सरकार के खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड के चेयरमैन और 'इंडियन हिमालयन काउंसिल ऑफ नालंदा बुद्धिस्ट ट्रेडिशन' के महासचिव श्री मलिंग गोम्बु, उत्तराखंड अल्पसंख्यक आयोग के वाइस चेयरमैन श्री बलजीत सिंह सोनी और अन्य मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, गणमान्य व्यक्ति, कलाकार और दर्शक शामिल हुए। कार्यक्रम की शोभा तिब्बती, भूटानी और नेपाली सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों, गैडेन जांगत्से, डेक्यिलिंग के भिक्षुओं और सुभारती यूनिवर्सिटी में पढ़ रहीं म्यांमार की भिक्षुणियों द्वारा किए गए प्रार्थना से और बढ़ गई।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. सेवांग ने बुद्ध की शिक्षाओं को ग्रहण करने और उन्हें जीवन में उतारने पर जोर दिया। इन शिक्षाओं को परम पावन दलाई लामा की मुख्य प्रतिबद्धताओं, खासकर मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने और प्राचीन भारतीय ज्ञान को पुनर्जीवित करने के नजरिए से बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। डॉ. सेवांग ने शाक्यमुनि बुद्ध के १२ कार्यों पर दिखाई गई फिल्म में स्क्रीन पर लिखे संदेश 'अप्प दीपो भव, अप्प दीपो भव (अपना दीपक स्वयं बनो, अपना दीपक स्वयं बनो)!' पर खास तौर पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'हम अपनी अज्ञानता को दूर किए बिना अपना दीपक स्वयं नहीं बन सकते, हम अध्ययन और अभ्यास के बिना अपना दीपक स्वयं नहीं बन सकते।' इसलिए, परम पावन ने हमें सलाह दी है कि बौद्ध धर्मग्रंथों को केवल पवित्र वेदी पर न रखा जाए, बल्कि उन्हें अपनी पाठ्य-पुस्तक की तरह पढ़ा और समझा जाए।' कार्यक्रम का समापन विश्व शांति के लिए नगर परिक्रमा के साथ हुआ।

- देहरादून तिब्बती बस्ती कार्यालय की रिपोर्ट

◆ ११. पोंटा चोलसुम क्षेत्रीय घोटोन आयोजन समिति ने भारतीय स्कूलों में ३-दिन का एसईई लर्निंग और चार मुख्य प्रतिबद्धताओं' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया

१८ मई, २०२६

पोंटा। दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन समारोहों के तहत पोंटा चोलसुम क्षेत्रीय घोटोन आयोजन समिति ने १३ से १५ मई तक कई भारतीय स्कूलों

में 'सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक (सोशल, इमोशनल और एथिकल- एसईई) लर्निंग' और परम पावन १४वें दलाई लामा की 'चार मुख्य प्रतिबद्धताओं' पर तीन दिन का जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

परम पावन दलाई लामा के लिए दुभाषिये का काम कर रहे डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध को 'द तिब्बत म्यूजियम' के साथ एसईई लर्निंग और परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं पर बातचीत करने और प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया था। द तिब्बत म्यूजियम ने परम पावन दलाई लामा के जीवन और योगदान को दिखाने वाली तस्वीरों की प्रदर्शनी भी आयोजित की।

पहले दिन यानी, १३ मई को डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध ने गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पोंटा साहिब और विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भुप्पुर में शिक्षकों और छात्रों के सामने एसईई लर्निंग और परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं पर बातचीत की। इस अवसर पर द तिब्बत म्यूजियम ने परम पावन दलाई लामा के जीवन पर फोटो प्रदर्शनी लगाई।

दूसरे दिन यानी, १४ मई को, डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध ने हिल व्यू पब्लिक स्कूल, माजरा और गवर्नमेंट बॉयज सीनियर सेकेंडरी स्कूल, तारुवाला में स्टाफ और छात्रों के सामने एसईई लर्निंग और परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं पर बातचीत की। यहां भी द तिब्बत म्यूजियम ने परम पावन १४वें दलाई लामा की जीवनी और योगदान को दिखाने वाली फोटो प्रदर्शनी भी लगाई।

तीसरे दिन यानी, १५ मई को डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध ने गुरु नानक मिशन पब्लिक स्कूल, शुभखेड़ा और राइजिंग स्टार पब्लिक स्कूल, श्यामपुर में शिक्षकों और छात्रों के सामने एसईई लर्निंग और परम पावन दलाई लामा की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं पर बातचीत की। तिब्बत म्यूजियम में परम पावन दलाई लामा के जीवन पर लगी फोटो प्रदर्शनी के अलावा, पोंटा चोलसम स्थित मेन-त्सी-खांग शाखा ने स्कूल के शिक्षकों और स्टाफ के लिए मुफ्त मेडिकल जांच की और उन्हें दवाइयां भी बांटीं।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध की बातचीत और तिब्बत म्यूजियम की फोटो प्रदर्शनी के जरिए हुए जागरूकता सत्रों में लगभग ३,५०० छात्रों और १०० से ज्यादा शिक्षकों ने शिरकत की और लाभ उठाया। इन सत्रों के दौरान डॉ. कैलाश चंद्र बौद्ध ने छात्रों के सवालों के जवाब भी दिए और चर्चा किए गए विषयों पर विस्तार से जानकारी दी।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम के आखिर में पोंटा चोलसुम तिब्बती बस्ती अधिकारी गेलेक जमयांग ने स्कूल के प्राचार्यों और प्रशासकों को सम्मान के तौर पर यादगार तोहफे दिए।

- टीएसओ, पोंटा चोलसुम की रिपोर्ट

◆ १२. कुल्लू पालराब्लिंग ने परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के सम्मान में धर्मार्थ कार्यक्रम आयोजित किए

१४ मई, २०२६

कुल्लू मनाली। परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के अवसर पर मनाए जा रहे 'करुणा वर्ष' के तहत पालराब्लिंग तिब्बती बस्ती की स्थानीय घोटोन समिति ने स्थानीय भारतीय समुदाय के कल्याणार्थ कई धर्मार्थ अभियान शुरू किए हैं। ये गतिविधियां परम पावन दलाई लामा के सभी जीवों के प्रति करुणा और सेवा के गहरे दृष्टिकोण को अमल में लाने की कोशिश के तहत आयोजित की गईं।

कार्यक्रम के तहत समिति ने हाल ही में कुल्लू जिले के अलग-अलग भारतीय कल्याण संस्थानों में रह रहे १७६ बुजुर्ग स्त्री-पुरुषों को एक दिन दोपहर में शाकाहारी भोजन कराया। इन संस्थानों में वृद्धाश्रम, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाली बुजुर्ग महिलाओं की देखभाल करने वाले केंद्र, मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए घर और दृष्टिबाधित बच्चों के लिए संस्थान शामिल हैं।

इसी तरह, संबंधित अधिकारियों के साथ मिलकर समिति ने जिले के छह प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले कुल ३७६ छात्रों को स्कूली सामान बांटा। इन स्कूलों में डोभी, पटलीकुहल, मनाली, १५ माइल और कलाद के सरकारी प्राथमिक विद्यालय र मनाली का संभूत तिब्बती प्राथमिक विद्यालय शामिल हैं।

संबंधित संस्थानों में आयोजित कार्यक्रमों के दौरान, स्थानीय घोटोन समिति के चेयरमैन बस्ती अधिकारी ने ऐसे आयोजन के पीछे के मकसद के बारे में बताया। इसके बाद, स्थानीय आयोजन समिति की ओर से संबंधित संस्थानों के प्रमुखों को पारंपरिक खटक (सम्मान का स्कार्फ) और स्मृति-चिह्न भेंट किए गए।

इस मौके पर अलग-अलग संस्थानों के प्रशासकों ने गरीब और वंचित भारतीयों, मरीजों और छात्रों की मदद के मकसद से करुणा से भरपूर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए कुल्लू के तिब्बतियों के प्रति आभार और धन्यवाद प्रदर्शित किया। उन्होंने परम पावन दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना कीं और शुभकामनाएं भी दीं।

स्थानीय घोटोन समिति ने आगे कहा कि परम पावन दलाई लामा की इच्छा और मार्गदर्शन के अनुसार, वे बड़े समुदाय के भले के लिए और भी सामाजिक कल्याण गतिविधियां करते रहेंगे।

- टीएसओ कुल्लू-मनाली की रिपोर्ट

◆ १३. टोक्यो यूनिवर्सिटी के कोमाबा परिसर में पुनर्जन्म, सुरक्षा और लोकतंत्र पर संगोष्ठी

११ मई, २०२६

टोक्यो। तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट, क्लोज्ड डोर पॉलिसी कंसल्टिंग और स्टूडेंट्स फॉर ए फ्री तिब्बत जापान ने १० मई को टोक्यो यूनिवर्सिटी के कोमाबा परिसर में 'जापान-तिब्बत-भारत: पुनर्जन्म, सुरक्षा और लोकतंत्र' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की। विद्वानों, शिक्षाविदों, कार्यकर्ताओं, मीडिया प्रतिनिधियों, छात्रों और आम जनता ने बड़ी रुचि के साथ इस संगोष्ठी में भाग लिया।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट के कार्यक्रम निदेशक और तिब्बती सांसद दोरजी सेतान ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और संगोष्ठी के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया। इसका उद्देश्य जापान, तिब्बत और भारत पर ध्यान केंद्रित करने वाले रणनीतिक विचारकों को एक साथ लाना है, ताकि यह प्रमाणित किया जा सके कि कैसे हिन्द-प्रशांत क्षेत्र के प्रमुख लोकतांत्रिक देश अपने सभ्यतागत और सुरक्षा हित में तिब्बत मुद्दे से जुड़ सकते हैं।

जापान और पूर्वी एशिया में परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. सेवांग ग्यालपो आर्य ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने इस विरोधाभास को समझाया कि धर्म को अफीम कहने वाला (चीनी कम्युनिस्ट पार्टी) शासन आक्रामक रूप से धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है और उसको वैध बनाने की कोशिश में है। उन्होंने चेतावनी दी कि भारत और जापान स्वतंत्र लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष देश हैं, लेकिन धार्मिक दमन और परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म में सीसीपी के हस्तक्षेप पर उनकी चुप्पी उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा और लोकतंत्र पर बुरा असर डाल सकती है।

पैनल में शामिल प्रमुख वक्ताओं में डॉ. ग्याल लो (शैक्षिक समाजशास्त्री और तिब्बत में चीन की आत्मसातीकरण और शिक्षा नीतियों के प्रमुख विशेषज्ञ), टोक्यो यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट स्कूल ऑफ लॉ एंड पॉलिटिक्स के प्रो. सतोशी हिरानो, हितोत्सुबाशी यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट स्कूल ऑफ लॉ एंड इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल गवर्नेंस रिसर्च की प्रो. माइको इचिहारा और टोक्यो इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्ट्रैटेजी के डॉ. सटोरू नागाओ (जो हडसन इंस्टीट्यूट के फेलो और जिंदल इंडिया इंस्टीट्यूट के इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ एडवाइजर्स के सदस्य भी हैं) शामिल थे।

क्लोज्ड-डोर पॉलिसी कंसल्टिंग की ज्योत्स्ना मेहरा ने चर्चा का संचालन किया। पैनल ने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की, जैसे कि धार्मिक मामलों में बढ़ते चीनी हस्तक्षेप से निपटने के लिए जापान और भारत क्या कर सकते हैं? हालिया चीनी नस्लीय एकता कानून और उसके परिणाम, हिन्द-प्रशांत रणनीति और क्वाड का भविष्य, भारत की सीमा पर चीन का लगातार निर्माण गतिविधियां और हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामकता को रोकने के लिए भारत और जापान द्वारा उठाए जा सकने वाले ठोस कदमों पर चर्चा हुई।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट और तिब्बत हाउस, जापान की ओर से चीनी औपनिवेशिक आवासीय विद्यालयों पर तैयार रिपोर्ट 'व्हेन दे केम टू टेक अवर चिल्ड्रेन' का जापानी अनुवाद जारी किया गया और दर्शकों के बीच वितरित किया गया।

सिंपोजियम के दौरान सवाल-जवाब सत्र में दर्शकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आयोजकों ने सिंपोजियम को संभव बनाने के लिए टोक्यो यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर टोमोको एको का धन्यवाद किया और सभी वक्ताओं व मेहमानों को खटक (तिब्बती स्कार्फ) भेंट किए। कई लोगों ने सुझाव दिया कि जापान में इस तरह के सिंपोजियम बार-बार आयोजित किए जाने चाहिए।

- तिब्बत कार्यालय, जापान की रिपोर्ट

१४. बर्लिन कार्निवल फेस्टिवल की ३०वीं सालगिरह पर तिब्बत ने 'ओवरऑल विनर' का खिताब जीता, तिब्बत की खास सांस्कृतिक विरासत का जश्न

२६ मई, २०२६

बर्लिन, २४ मई २०२६। तिब्बती पहचान की ऐतिहासिक और दमदार प्रस्तुति में 'द एसोसिएशन ऑफ तिब्बतन इन जर्मनी और तिब्बतन इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स या तिब्बती कला संस्थान (टिपा) ने जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर बर्लिन के ३०वीं एनिवर्सरी कार्निवल फेस्टिवल में पहली बार हिस्सा लिया। टिपा ने दुनिया भर से आए लाखों दर्शकों के सामने तिब्बती संस्कृति की अटूट ताकत, सुंदरता और असलियत को गर्व के साथ पेश किया।

टिपा की भागीदारी सांस्कृतिक प्रस्तुति से कहीं ज्यादा अहम थी। ऐसे समय में, जब चीनी सरकार तिब्बती धर्म, भाषा, संस्कृति और पहचान पर कड़ी पाबंदियां लगा रही है, इन प्रस्तुतियों ने साफ तौर पर यह दिखाया कि तिब्बती संस्कृति आज भी जिंदा है, मजबूत है और तिब्बती लोगों से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। यह कार्यक्रम बीजिंग की उन कोशिशों का जबरदस्त जवाब था, जिनके जरिए वह तिब्बती इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने और तिब्बती संस्कृति को चीनी संस्कृति का ही हिस्सा बताने की साजिश करता रहा है।

फेस्टिवल के दौरान तिब्बती कलाकारों ने पारंपरिक स्टॉम्पिंग डांस (ड्रोडुंग), एक्रोबैटिक ड्रम डांस (रेल्पा), याक डांस, लोक गीत और तिब्बत के तीनों प्रांतों की पारंपरिक वेशभूषा की प्रस्तुतियां दीं। सदियों पुरानी ये कलात्मक परंपराएं तिब्बती सभ्यता की समृद्धि और विशिष्टता को दर्शाती थीं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से प्रशंसा और भावनात्मक समर्थन मिला। कई दर्शकों ने इन प्रस्तुतियों को सांस्कृतिक रूप से प्रेरणादायक और राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बताया।

यूरोप के सबसे बड़े बहुसांस्कृतिक समारोह में से एक, इस चार दिवसीय कार्यक्रम में ७० से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय समूहों के ४,००० से अधिक कलाकारों ने हिस्सा लिया और ७,७०,००० से अधिक दर्शक शामिल हुए। इस वैश्विक मंच पर, तिब्बतियों ने एक मजबूत और गरिमापूर्ण संदेश दिया कि तिब्बती संस्कृति को मिटाया नहीं जा सकता, न ही उसे अपने मुताबिक नए सिरे से से लिखा जा सकता है और न ही हड़पा जा सकता है।

आयोजकों ने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती प्रस्तुति उस राष्ट्र के इतिहास, आध्यात्मिकता और पहचान की एक पवित्र अभिव्यक्ति है। उन्होंने चिंता जताई कि चीनी सरकार सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का इस्तेमाल राजनीतिक हथियार के तौर पर करती रही है, जबकि तिब्बत के भीतर असली तिब्बती सांस्कृतिक और धार्मिक अभिव्यक्ति पर रोक लगाती रही है। इसके विपरीत, बर्लिन में तिब्बती सांस्कृतिक प्रस्तुति ने तिब्बती लोगों की असली आवाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी विरासत को बचाने के उनके संकल्प को दर्शाया। तिब्बत ब्यूरो जिनेवा ने कहा कि टिपा को यूरोप लाना, दुनिया को तिब्बती सभ्यता की गहराई और उसकी खास पहचान से परिचित कराने की एक बड़ी कोशिश का हिस्सा है। ब्यूरो

ने इस बात पर भी जोर दिया कि तिब्बती संस्कृति पूरी तरह से तिब्बती लोगों की है और किसी भी सरकार को इसमें हेर-फेर या इसका राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए।

हमने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से भी अपील की कि वे तिब्बती भाषा, धर्म, परंपराओं और कलाओं को बचाने में तिब्बतियों की मदद करें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती संस्कृति की रक्षा करना सिर्फ तिब्बतियों का ही मुद्दा नहीं है, बल्कि यह मानवीय गरिमा, सांस्कृतिक विविधता और बुनियादी मानवाधिकारों की रक्षा से जुड़ी एक वैश्विक जिम्मेदारी भी है।

बर्लिन कार्निवल फेस्टिवल में कई प्रतिष्ठित पुरस्कार श्रेणियां थीं, जिनमें रचनात्मकता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और कलात्मक प्रदर्शन को सराहा गया। इन श्रेणियों में सारे विजेता यानी, बेस्ट ड्रेस और कॉस्ट्यूम, बेस्ट डांस और म्यूजिक, बेस्ट थीम और थीम का क्रियान्वयन, बेस्ट प्लेटफॉर्म, बेस्ट ९०-सेकंड का प्रदर्शन और बच्चे व युवा कलाकार शामिल थे। हर श्रेणी में दुनिया भर के कलाकारों के बेहतरीन हुनर, मौलिकता और समर्पण को मान्यता दी गई। ७० से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय समूहों के ४००० से अधिक कलाकारों के बीच, तिब्बती संस्कृति ने अपने शानदार सांस्कृतिक प्रदर्शन के लिए 'ओवरऑल विनर' का पुरस्कार जीतकर उल्लेखनीय सफलता हासिल की। तिब्बती सांस्कृतिक प्रदर्शन अपनी जीवंत प्रस्तुति, कलात्मक उत्कृष्टता और पारंपरिक तिब्बती विरासत से गहरे जुड़ाव के कारण सबसे अलग रहा। इस उपलब्धि ने समूह के हुनर को उजागर किया और अंतरराष्ट्रीय मंच पर संगीत और नृत्य के जरिए सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने और उन्हें अभिव्यक्त करने के महत्व पर जोर दिया। इस साल, हम परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में साल भर चलने वाले समारोह मना रहे हैं। इसी भावना के साथ, इस साल के कार्निवल फेस्टिवल की थीम 'करुणा वर्ष' है, जो सभी के लिए दया, शांति, एकता और करुणा के मूल्यों को उजागर करती है।

इसलिए, बर्लिन कार्निवल ऑफ कल्चर्स सिर्फ विविधता का उत्सव नहीं रह गया। यह दुनिया और खासकर चीन के लिए शांतिपूर्ण लेकिन कड़ा संदेश देता है कि दशकों के दमन और राजनीतिक दबाव के बावजूद, तिब्बती संस्कृति जीवंत और अटूट बनी हुई है और तिब्बती लोगों के दिलों में गहराई से बसी हुई है। संगीत, नृत्य और कलात्मक अभिव्यक्ति के जरिए, तिब्बतियों ने दिखाया कि उनकी पहचान को दबाया नहीं जा सकता और तिब्बत की भावना मजबूती, गर्व और अटूट दृढ़ता के साथ बनी हुई है।

-तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

◆ १५. चिली के सांसद लुइस माला वालेंजुएला और अल साल्वाडोर के जोस फ्रांसिस्को लिरा अल्वाराडो ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

२६ मई, २०२६

धर्मशाला। चिली के सांसद लुइस माला वालेंजुएला और अल साल्वाडोर के जोस फ्रांसिस्को लिरा अल्वाराडो ने २५ मई को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेयखांग से मुलाकात की।

लैटिन अमेरिका से आए सांसदों का स्वागत करते हुए स्पीकर ने सिक्योंग (तिब्बती सरकार के प्रमुख) के आगामी शपथ ग्रहण समारोह में लैटिन अमेरिकी सांसदों द्वारा भागीदारी की पुष्टि किए जाने की सराहना की। उन्होंने, खासकर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की निर्वासन की स्थिति को देखते हुए इसे महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक बताया। उन्होंने तिब्बतियों के ६६ से अधिक वर्षों के निर्वासन के दौरान भारत, अमेरिका, यूरोपीय देशों, लैटिन अमेरिकी देशों और अन्य देशों से मिले निरंतर समर्थन को भी याद किया।

स्पीकर ने कहा कि तिब्बती राजनीतिक संघर्ष को जारी रखने के साथ-साथ सीटीए ने परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बत की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और सुरक्षित करने में सफलता हासिल की है और तिब्बती मुद्दे को वैश्विक मंच पर भी पहुंचाया है। उन्होंने तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति के बारे में भी बात की और चेतावनी दी कि हाल ही में अपनाया गया 'एथनिक यूनिटी लॉ (नस्लीय एकीकरण कानून)' तिब्बती पहचान को खत्म करके तिब्बती सांस्कृतिक और भाषाई विरासत पर गंभीर दुष्प्रभाव डाल सकता है।

डिप्टी स्पीकर तेयखांग ने कहा कि लैटिन अमेरिकी सांसदों का यह दौरा अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एक मजबूत संदेश देता है कि सीटीए दुनिया भर के तिब्बतियों का वैध प्रतिनिधि बना हुआ है। उन्होंने कहा कि धर्मशाला में उनका एकजुटता दौरा यह दिखाता है कि किसी देश के आकार या शक्ति की परवाह किए बिना अंतरराष्ट्रीय नियमों और सिद्धांतों को बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है।

उन्होंने आगे कहा कि सांस्कृतिक दमन, उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ कई लैटिन अमेरिकी देशों द्वारा झेले गए संघर्ष तिब्बती संघर्ष से काफी मिलते-जुलते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि तिब्बत का मुद्दा केवल कब्जे का नहीं है, बल्कि तिब्बती पहचान के मूल स्तंभों- धर्म, संस्कृति और भाषा- पर हमलों का भी है।

सांसदों को संसदीय हॉल का दौरा भी कराया गया और उन्हें निर्वासित तिब्बती संसद के गठन और कामकाज के बारे में जानकारी दी गई।

- तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ १६. यूरोपीय संसद ने चीन के 'एथनिक यूनिटी लॉ (नस्लीय एकीकरण कानून)' की कड़ी निंदा की, इसे रद्द करने और प्रतिबंधित करने की मांग की

०१ मई, २०२६

ब्रसेल्स, ३० अप्रैल। यूरोपीय संसद ने आज ३० अप्रैल, गुरुवार को पारित एक प्रस्ताव में चीन (पीआरसी) के 'एथनिक यूनिटी लॉ (नस्लीय

एकीकरण कानून)'की कड़ी निंदा की। यह बीजिंग की जबरन आत्मसातिकरण की नीतियों के अंतरराष्ट्रीय विरोध में एक बड़ी उपलब्धि है। यूरोपीय सांसदों ने चेतावनी दी है कि ०१ जुलाई से लागू होने वाला यह कानून तिब्बती लोगों की सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विरासत को मिटाने की सुनियोजित कोशिश है। यह कानून सभी सार्वजनिक क्षेत्रों में सरकारी विचारधारा को अनिवार्य बनाता है और स्थानीय भाषाओं के बजाय मंदारिन भाषा को प्राथमिकता देता है।

इस प्रस्ताव का मुख्य बिंदु तिब्बती आध्यात्मिक मामलों में बीजिंग के हस्तक्षेप को पूरी तरह से खारिज करना है। संसद ने स्पष्ट रूप से कहा है कि दलाई लामा का उत्तराधिकार पूरी तरह से एक धार्मिक मामला है, जिसे केवल तिब्बती बौद्ध परंपराओं के अनुसार तय किया जाना चाहिए, न कि सरकार के दबाव में। इसके अलावा, प्रस्ताव में प्रमुख राजनीतिक कैदियों की तत्काल और बिना शर्त रिहाई की मांग की गई है। इनमें ११वें पंचेन लामा, गेधुन चोएक्की न्यिमा के साथ ही चोक्रुल दोरजे टेन रिम्पोछे और पाल्डेन येशी शामिल हैं। इन सबकी हिरासत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।

यूरोपीय संसद निर्वासन में रह रहे तिब्बती समुदायों को बीजिंग की काली छाया से बचाने के लिए ठोस कदम भी उठा रही है। नए कानून की 'एक्स्ट्रा-टेरिटोरियल (देश की सीमाओं से परे लागू होने वाली)' प्रकृति को उजागर करते हुए सांसदों ने ईयू के सभी सदस्य देशों से चीन के साथ प्रत्यर्पण संधियों को निलंबित करने का आग्रह किया है, ताकि विदेशों में रहने वाले तिब्बतियों के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले दमन को रोका जा सके। जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए, प्रस्ताव में इन दमनकारी नीतियों को बनाने और लागू करने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ ईयू ग्लोबल ह्यूमन राइट्स सैंक्शंस रिजीम (वैश्विक मानवाधिकार प्रतिबंध व्यवस्था) को क्रियान्वित करने की मांग की गई है।केंद्रीय तिब्बती प्रशासन को भेजे गए यूरोपीय संघ का यह औपचारिक रुख से यह संकेत मिलता है कि यूरोपीय संघ तिब्बती पहचान के संरक्षण को चीन के साथ अपने भविष्य के संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त मानता है।

चर्चा के बाद कमिश्नर हादजा लाहबिब ने तिब्बत में मानवाधिकारों की स्थिति पर ईयू की गहरी चिंता का इजहार किया। इसमें धर्म और विश्वास की आजादी पर पाबंदियां, संस्कृति और पहचान को बचाना और धार्मिक समुदायों के अपने मामलों को बिना किसी दखल के चलाने और अपने धार्मिक नेताओं (जिनमें परम पावन दलाई लामा भी शामिल हैं) को धार्मिक नियमों का पूरा सम्मान करते हुए आजादी से चुनने के अधिकार शामिल हैं। उन्होंने आगे कहा कि ईयू ११वें पंचेन लामा के ठिकाने और उनकी सलामती के बारे में भरोसेमंद जानकारी सार्वजनिक करने की मांग करता रहेगा।

अंतरराष्ट्रीय एकजुटता का स्पष्ट संकेत और तिब्बती लोगों के अधिकारों की रक्षा के महत्व को फिर से दोहराए जाने वाले कदम के तौर पर इस प्रस्ताव का स्वागत करते हुए ब्रुसेल्स स्थित 'तिब्बत कार्यालय' में परम पावन दलाई लामा की प्रतिनिधि रिग्जिन गेनखांग ने इस मजबूत और समय पर की गई कार्रवाई के लिए यूरोपीय संसद के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि चीन को जवाबदेह ठहराने और तिब्बती सांस्कृतिक व धार्मिक विरासत को बचाने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार ध्यान देना जरूरी है। प्रतिनिधि गेनखांग ने अन्य सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से अपील की कि वे चीन के 'एथनिक यूनिटी लॉ (नस्लीय एकीकरण कानून) से जुड़ी चिंताओं को दूर करने में यूरोपीय संसद के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं।

यह प्रस्ताव मुख्य रूप से ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय की लगातार सक्रियता और निरंतर पैरवी के कारण पारित हो सका। बहस के दौरान इस सहयोग का जिक्र तब हुआ जब यूरोपीय संसद के एक सदस्य ने तिब्बती प्रतिनिधिमंडल के साथ अपनी मुलाकातों का उल्लेख किया। इन लगातार प्रयासों से यह सुनिश्चित करने में मदद मिली कि तिब्बती लोगों की चिंताएं यूरोपीय संसद की प्राथमिकता बनी रहें।

यह प्रस्ताव प्रचंड बहुमत से पारित हुआ। इसके पक्ष में ४३९ वोट पड़े, विरोध में ५२ वोट पड़े जबकि ७१ सदस्य तटस्थ रहे।

- तिब्बत कार्यालय, ब्रुसेल्स की रिपोर्ट

◆ १७. बयान: तिब्बत पर कड़ी नजर: चीन कैसे सूचना प्रवाह को नियंत्रित करता है

०३ मई, २०२६

जवाबदेही का आधार प्रेस की आजादी होती है। यह एक आवश्यक रोशनी है, जो दुर्दांत शक्तियों को भयानक काम करने से रोकती है। यह सिर्फ छापने का अधिकार नहीं है, बल्कि सच जानने, असलियत सामने लाने और बराबरी की मांग करने का बुनियादी इंसानी अधिकार भी है।

जब हम पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना को देखते हैं, तो सेंसरशिप के एक ऐसे तंत्र को देखते हैं, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। 'रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) की हाल ही में जारी '२०२६ वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स' के मुताबिक, चीन दुनिया भर की इस सूची में १८० देशों में से १७८वें नंबर पर है, यानी सबसे नीचे के देशों में से एक। सबसे चिंता की बात आजाद रिपोर्टिंग के माहौल का लगातार बिगड़ना है। पिछले साल इसके कुल स्कोर में १४.८० से १३.८५ तक की और गिरावट आई है। यह पत्रकारों को जेल में डालने के मामले में दुनिया के सबसे बड़े देशों में से एक बना हुआ है और सूचना पर कड़ी पकड़ बनाए रखने के लिए सरकार के नियंत्रण की नीतियों पर बहुत ज्यादा निर्भर है।

एक तरफ, चीन में बहुत ज्यादा पाबंदियां हैं, तो दूसरी ओर तिब्बत कई दशकों से सूचनाओं के मामले में पूरी तरह से 'अंध कूप' बना हुआ है। 'फ्रीडम हाउस' की '२०२६ फ्रीडम इन द वर्ल्ड' रिपोर्ट में तिब्बत को लगातार तीसरे साल १०० में से शून्य स्कोर मिला है। यह दुनिया भर में सबसे कम स्कोर है। इसका पॉलिटिकल राइट्स स्कोर ४० में से -२ है।

सूचनाओं का यह ब्लैकआउट कोई इत्तेफाक नहीं है। यह मानवाधिकारों के उल्लंघन को सहज बनाने और छिपाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक जानबूझकर अपनाया गया सोचा-समझा तरीका है। तिब्बत को बाहरी दुनिया से काटकर, विदेशी पत्रकारों पर रोक लगाकर, विदेश में सूचना भेजने को अपराध बनाकर और वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) पर बेरहमी से रोक लगाकर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी यह

सुनिश्चित करती है कि कोई साक्ष्य न बचे।

हाल के वर्षों में संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र शोधकर्ताओं, आजाद न्यूज रिपोर्टर या अंतरराष्ट्रीय प्रेस को तिब्बत के अंदर जाकर आजादी और निष्पक्षता से जांच करने या रिपोर्ट करने की इजाजत मिलने का एक भी मामला सामने नहीं आया है। आजाद रिपोर्टिंग ज्यादातर तिब्बत से बाहर रह रहे तिब्बती पत्रकारों और समूहों द्वारा की जाती है, जिन्हें तिब्बत के अंदर रह रहे तिब्बती सूत्रों से जानकारी मिलती है। यह काम वे पुलिस की निगरानी और उत्पीड़न के भारी खतरा मोल लेकर करते हैं। सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय संगठनों और नेताओं की ओर से तिब्बत के पंचेन लामा तक पहुंचने और उनसे स्वतंत्र रूप से मिलने की गुजारिशों को लगातार ३१ सालों तक ठुकराया जाना, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की उस आदत का सबूत है, जिसके तहत वह जानकारी को दबाकर रखती है।

तिब्बती लोग हर साल डर के मारे अपनी गतिविधियों पर खुद पाबंदी लगाकर जीते हैं, खासकर ऑनलाइन और ऑफलाइन बातचीत में, ताकि तिब्बत के अंदर के हालात की कोई भी सच्चाई बाहर न आ सके। तिब्बत के बाहर रहने वाले तिब्बतियों और विदेशियों से बातचीत करने और तिब्बत के बारे में कोई भी जानकारी देने पर, तिब्बतियों को अक्सर अलगाववादी, राज्य की सुरक्षा को खतरे में डालने वाला और मुसीबत खड़ी करने वाला बताकर झूठे आरोपों में मनमाने ढंग से गिरफ्तार किया जाता है, उन्हें बाहरी दुनिया से काटकर हिरासत में रखा जाता है, जबरन गायब कर दिया जाता है और अमानवीय यातनाएं दी जाती हैं।

चीनी सरकार ने तिब्बत में स्वतंत्र रिपोर्टिंग पर भी पूरी तरह से रोक लगा रखी है। उसने विदेशी पत्रकारों के लिए कड़े विशेष परमिट को अनिवार्य बना रखा है और संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार विशेषज्ञों की तथ्य-अन्वेषण की मांगों को अक्सर ठुकरा दिया है। 'फॉरेन कॉरेस्पोंडेंट्स क्लब ऑफ चाइना' की पुष्टि के अनुसार, तिब्बत में प्रवेश लगभग नामुमकिन है। अगर कभी-कभार अनुमति मिलती भी है, तो वह पूरी तरह से सरकार द्वारा नियंत्रित और पहले से तय दौरों तक ही सीमित होती है, जहां प्रेस से बात करने पर स्थानीय लोगों को कड़ी सजा धमकी दी जाती है। असल में, बिना रोक-टोक पहुंच से इनकार करना ही मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन का सबसे बड़ा सबूत है। यह साबित करता है कि जिस सरकार के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, वह पूरे इलाके को सूचना के एक ऐसे किले में नहीं बदलेगी, जहां कोई पहुंच न सके।

चीन और खासकर तिब्बत में प्रेस की आजादी पर लगी रोक को समझने के लिए उस कानूनी ढांचे पर गौर करना जरूरी है जिसका इस्तेमाल चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) सेंसरशिप को लागू करने के लिए करती है। ये कानून अक्सर अस्पष्ट भाषा में लिखे जाते हैं, ताकि उनके कई अर्थ निकाले जा सकें और सरकार के नजरिए से मेल न खाने वाली किसी भी रिपोर्टिंग को अपराध माना जा सके।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रेस की आजादी को खत्म करने और तिब्बत में सूचनाओं को ब्लैकआउट करने के लिए सुनियोजित तरीके से एक कानूनी किला बनाया है। व्यापक 'राष्ट्रीय सुरक्षा कानून' और 'झगड़े मोल लेने और परेशानी खड़ी करने' जैसे अस्पष्ट आपराधिक आरोपों का हथियार की तरह इस्तेमाल करके अधिकारी अक्सर स्वतंत्र रिपोर्टिंग और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को 'अलगाववाद' या सरकार को अस्थिर करने की कोशिश बताकर उन पर मुकदमा चलाते हैं। इसके अलावा, २०२६ के नए साइबर अपराध नियमों, धार्मिक प्रशासन के कड़े उपायों और चीनीकरण करने के आक्रामक निर्देशों के जरिए डिजिटल संचार पर पूरी निगरानी रखी जाती है। सभी मीडिया में सीसीपी की विचारधारा को अनिवार्य किया जाता है और बाहरी दुनिया से संपर्क को अपराध माना जाता है। कुल मिलाकर, चीन ने न केवल सच को दबाया है बल्कि उसे कानूनी रूप से प्रतिबंधित भी कर दिया है, ताकि तिब्बत की सच्चाई को दर्ज करने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति को राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर तुरंत गायब कर दिया जाए।

- डीआईआईआर के तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन अंतर्गत यूएन, ईयू और मानवाधिकार डेस्क की रिपोर्ट।

◆ १८. तिब्बत में आत्मदाह करने वालों की याद में

डोरजी सेतेन

पेशा - शेफ

आत्मदाह की तारीख - २७ मई, २०१२

स्थान - जोखांग, ल्हासा, तिब्बत

उम्र - १९

स्थिति- २७ मई २०१२ को दिवंगत।

तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन, डीआईआईआर, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन

२७ मई २०१२

१९ साल के हाई स्कूल पास दोरजी सेतेन और उनके दोस्त धारग्ये ने २७ मई २०१२ को दोपहर करीब २:१५ बजे (स्थानीय समयानुसार) जोखांग के पास खुद को आग लगा ली। उन्होंने तिब्बत के अंदर तिब्बतियों पर चीन के दमन के विरोध में ऐसा किया।

तिब्बत की राजधानी ल्हासा में खुद को आग लगाने की ये पहली घटना थी। कुछ ही मिनटों में हथियारबंद सुरक्षा बल मौके पर पहुच गये और दोनों युवकों को खींचकर ले गए और घटना का कोई निशान नहीं छोड़ा।

२७ मई २०१२ को विरोध प्रदर्शन के बाद दोरजी की दुखद मृत्यु हो गई। चीनी पुलिस ने दोरजी सेतेन का शव लौटाने से इनकार कर दिया। उनके परिवार को कुछ राख मिली, जिसकी न तो पुष्टि हुई और न ही कोई कारण बताया गया।

अमदो प्रांत के बोरा के रहने वाले दोरजी आत्मदाह करते समय ल्हासा के एक रेस्तरां में शेफ के तौर पर काम कर रहे थे।

उस समय तक तिब्बत की राजधानी में दोरजी सेतेन और धारग्ये द्वारा आत्मदाह की यह पहली घटना थी।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीचे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

भारत तिब्बत सहायता समूह कार्यक्रम

11वें पंचेन लामा के जबरन लापता किए जाने की 31वीं वर्षगांठ के स्मरण में

चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों पर आधारित पुस्तक का विमोचन करते हुए वक्ता एवं अतिथि